इस्लाम में ईद मिलादुन्नबी की हैसियत

अल्लामा मुहम्मद सईद अहमद मुजद्दिदी

इस्लामिक पब्लिशर

इस्लाम में ईद मीलादुन्नबी ﷺ की हैसियत

मअ

हुजर-ए-नबवी के अन्दर नक़्श नअ़तें

तर्जमा

अल्लामा मुहम्मद सईद अहमद मुजद्दिदी

नाशिर

इस्लामिक पब्लिशर

447, गली सरौते वाली, मटिया महल जामा मस्जिद दिल्ली 6

किताब का नाम —— इस्लाम में ईद मीलादुन्नबी की हैसियत

मुसन्निफ ———— अल्लामा सईद अहमद मुजद्दिदी

कम्पोज़िग ———— मुहम्मद ज़ाकिर हुसैन हज़ारी बाग़

सफहात ———— 64

कीमत ———— 25 रुपये

नाशिर

इस्लामिक पब्लिशर

447, गली सरौते वाली, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

फोन:- 23284316, फेक्स:- 23284582

बिस्मिल्लाहहिर्रहमानिर्रहीम

हर्फे अव्वल

ज़ेरे नज़र किताब इस्लाम में ईद मिलादुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हैसियत शैखे तरीकत हजरत अल्लामा अबुल बयान मुहम्मद सईद अहमद मुजद्दिदि मद्दाजिल्लहुल आली बानी व अमीरे आला आलमी इदारह तन्जीमुल इस्लाम के बहरे ज़ख़ार से छलके हुए वह गौहरे ताबदार हैं जिनमें क़ुरआन व सुन्नत असारे सहाबा व ताबेईन और अक़वाले सल्फे सालेहीन की रौशनी में मसअल-ए-मिलाद शरीफ की इस्लामी हैसियत को उजागर किया गया है। तहरीर में सादगी सन्जीदगी व मतानत और इल्म व वकार का पहलु ग़ालिब है। यही वजह है की कोई भी मक्तबे फ़िक्र किताब में पेश करदह हवालाजात व दलाइल की तगलीत या तरदीद नहीं कर सका। जो कि मस्लके अहलेसुन्नत की हक़्क़ानियत का मुँह बोलता सुबूत है।

मोहतरम कारेईन! अगर इस किताबचा में कोई खुबी व कमाल पाएँ तो हमरी दुनिया व आकेबत के लिए दुआए खैर फरमाएँ। अगर कोई मतन या पुरूफ रीडिंग की गलती पाएँ तो दामने अफ्व में जगह देते हुए इदारह को मुत्तलअ करें ताकि आइन्दा एडिशन में उसकी इस्लाह व इज़ाला किया जा सके।

आखिर में कारेईने किराम की खिदमत में इस्तआ है कि शारेह मक्तूबात इमामे रब्बानी हजरत अल्लामा अबुल बयान मुहम्मद सईद अहमद मुजद्दिदी मददाज़िल्लहुल आली की शिफाए कामिला सेहते आजला और दराज़ि-ए-उम्र के लिए दुआ फरमाएँ ताकि अलबयानात शरह मक्तूबात पाय-ए-तकमील तक पहुँच सके और जल्द अज़जल्द छप कर मन्जरे आम पर आ सके। अल्लाह तआला हम सब का हामी व नासिर हो।

शोब-ए-नश्र व इशाअत
आलमी इदारह तनजीमुल इस्लाम
इदारा मरकज़ी जामेअ मस्जिद
नक्श्बन्दिया 121-बी माडल टाउन
गोजरानवाला-पाकिस्तान 92-431-41160

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ وَنُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم ط

कुरआने हकीम की रौशनी में दिन मनाने की हैसियत व अहमियत

कुरआने मजीद में इरशादे बारी तआला है।

وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰمِ اللّٰهِ..........الخ (پ١٣ع١٢)

(सूरह इब्राहीम प.13 आयत 12)

इस आयत में रब तआला ने हजरत मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया के बनी इस्राईल को वह दिन याद दिलाओ जिनमें अल्लाह तआला ने उन पर नेअमतें नाज़िल फरमाई।

मालूम हुआ कि नेअमतें मिलने के दिनों को यादगार के तौर पर मनाना हुक्मे खुदावन्दी है। यूँ तो सब दिनों और रातों को अल्लाह तआला ने ही पैदा फरमाया है मगर देखना यह है कि इस आयत में जिन दिनों का खास तौर पर मनाने और उनकी याद दिलाने का हुक्म दिया गया है वह कौन से दिन हैं?

मुफस्सेरीने उम्मत ने फरमाया के अय्यामुल्लाहि से मुराद वह दिन हैं जिनमें अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर इनामात फरमाए।

(तफसीरे इब्ने अब्बास 'इब्ने जरीर खाज़िन' मदारिक वगैरहा)

कोई भी मुसलमान इस हकीकत से इनकार नहीं कर सकता कि हुजूर सरवरे काईनात सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आलमीन के लिए रहमत भी हैं और नेअमत भी।

❖ रहमत की दलील तो यह आयत है।

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ط..........الخ (پ١٧ع٧)

तर्जमा : और नहीं भेजा हमने आप को मगर रहमत बना कर तमाम जहानों के लिए। (सूरह अम्बिया,प0 17 आयत 107)

❖ आप के नेअमत होने की दलील यह आयत है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ كُفْرًا ط..........الخ (پ١٣ع١٧)

तर्जमाः क्या आप ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने बदला अल्लाह की नेअमत को कुफ्र करते हुए?

(सूरह इब्राहीम,प0 13 आयत 28)

इस आयत की तफसीर में सय्यिदना इब्ने अब्बास रजियल्लाहो तआला अन्हु फरमाते हैं।

نِعْمَةُ اللّٰهِ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ط

तर्जमा : अल्लाह की नेअमत से मुराद हजरत मुहम्मद सलल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं।

जब साबित हुआ के आप रहमत भी और नेअमत भी हैं तो अल्लाह की रहमत और अल्लाह की नेअमत के हुसूल पर उन दिनों में शुक्र अदा करना इज्हारे खुशी करना और लोगों को उन दिनों की अजमत व तारीख से अगाह करना और याद मनाना भी कुरआन मजीद से साबित है मुलाहिजा फरमाएँ।

पहली आयतः- قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ

فَلْيَفْرَحُوْا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ط (پ١١ع١١)

तर्जमा : ऐ महबूब लोगों से फरमा दीजिए के अल्लाह के फज़ल और उसकी रहमत के मिलने पर चाहिए के वह खुशी करें वह बेहतर है उससे वह जो वह जमा करते हैं।

(सूरह यूनुस प011 आयत 58)

इस आयत में फजल व रहमत के हुसूल पर खुशी मनाने और माल खर्च करने का हुक्म दिया गया है।

दूसरी आयतः-

وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ط (پ٣٠ع١٨)

तर्जमा : ऐ महबूब सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने

रब की नेअमत खूब बयान करो (यानी चर्चा करो)।
(सूरह वज़्ज़ुहा, प0 30 आयत11)

इस आयत में अल्लाह की नेअमत का जिक्र आम करने और खूब चर्चा करने का हुक्म दिया गया है।

तीसरी आयतः- وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ط

तर्जमाः और जिक्र करो अल्लाह की नेअमत का जो तुम पर हुई। (सूरह आले इमरान प0 4 आयत103)

जब हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बिला शुब्हा अल्लाह की नेअमत हैं तो आप की तशरीफ अवरी का इज्तेमाई या इन्फेरादी तौर पर जिक्र करना कुरआने हकीम से साबित हुआ और उसी अमल का नाम महफिले मिलाद है।

बिहम्देही तआला इन मुन्दर्जा बाला आयाते मुकददसा की रौशनी में यह अम्र बखुबी वाज़ेह हो गया कि रहमतों और नेअमतों के मिलने के दिन अल्लाह के खास दिन होते हैं लेहाज़ा उन दिनों की याद ताज़ा करना हुक्मे इलाही के ऐन मुताबिक है। इस लिए नेअमत मिलने पर इसका चर्चा करना चाहिए। साबित हुआ के रहमत मिलने पर खुशी मनाना और माल खर्च करना चाहिए। नीज़ यह भी साबित हुआ के हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला की तमाम रहमतों में से बड़ी रहमत और तमाम नेअमतों में से आला तरीन नेअमत हैं।

लेहाज़ा आपकी तशरीफ आवरी (मिलाद) का दिन मनाना और उस दिन हर जाईज़ खुशी का इज़्हार करना यह कुरआनी तालीमात के ऐन मुताबिक है। आमदे महबूबे खुदा और जुहूरे ज़ाते मुस्तफा सलल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जितनी भी खुशी मनाई जाए कम है और कुरआन मजीद के अहकाम पर अमल करना बिदअत नहीं बरकत है।

अहादीसे मुकददसा की रौशनी में दिन मनाने की हैसियत व इफादियत

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत पर खुशी मनाने से काफिर को भी फाईदा होता है।

पहली हदीसः- बुख़ारी शरीफ़ में है।

فَلَمَّا مَاتَ اَبُوْلَهَبٍ اُرِيَهٗ بَعْضُ اَهْلِهٖ بِشَرِّ حِيْبَةٍ قَالَ لَهٗ مَاذَا لَقِيْتَ قَالَ اَبُوْلَهَبٍ لَمْ اَلْقَ بَعْدَكُمْ غَيْرَ اَنِّیْ سُقِيْتُ فِیْ هٰذِهٖ بِعِتَاقَتِیْ ثُوَيْبَةَ ط

तर्जमाः जब अबू लहब मर गया तो उसके बाज अहल (हजरत अब्बास रजियल्लाहो अन्हु) ने उसको ख्वाब में बहुत बुरे हाल में देखा तो पूछा तुझ पर क्या गुज़री? अबू लहब ने कहा तुमसे जुदा होकर मुझे कोई खैर नहीं मिली सेवाए उसके कि मैं सैराब किया जाता हूँ कलिमा की उँगली से (पीर के दिन) कि उस दिन मैं ने उस उँगली से (हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पैदाईश की खुशी में) सुवैबा (लौन्डी) को आज़ाद किया था। (बुखारी जिल्द 2 पेज 764)

इसी हदीस को अल्लामा बदरूददीन ऐनी ने उम्दतुल कारी शरहे सहीह बुखारी (तबअ जदीद) जिल्द 2 पेज नम्बर 95 पर नक्ल फरमाया है। यही हदीस खसाईसे कुबरा जिल्द अव्वल में मौजूद है। नीज़ उसी हदीस को इमाम जलालुददीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैहि ने अलहावी लिलफतावा जिल्द अव्वल पेज 196 पर नक्ल किया है।

इसी तरह अल्लामा हाफिज इब्न हजर असकलानी शारेह बुखारी ने मुख्तलिफ अक़वाल नक्ल फरमा कर आखिर में अपने कौल से भी ताईद फरमाई। (फतहुल बारी जि0 9 पे0119)

गौर फरमाईये अबू लहब ऐसा सख्त काफिर था जिस की

मज़म्मत में कुरआन की पूरी सूरह **तब्बत यदा अबी लहबिव्वं वतब्बा।** नाज़िल हुई वह काफिर था हम मोमिन हैं वह दुश्मन था हम गुलाम हैं उसने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मिलाद की खुशी नहीं की थी बल्कि अपने भतीजे की खुशी की थी और हम रसूल सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की मिलाद की खुशी करते हैं। जब दुश्मनों और काफिरों को मिलाद की खुशी करने से इतना फाईदा पहुँच सक्ता है तो मोमिनों और गुलामों को कितना फाईदा पहुँचेगा?

हदीसे मजकूरह बाला से मिलाद के दिन की अहमियत और उस दिन खुशी मनाने की इफादियत जाहिर हुई।

(فَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِکَ ط)

दूसरी हदीसः-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहो अन्हु फरमाते हैं कि जब सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा से हिजरत फरमा कर मदीना मुनव्वरा तशरीफ लाए तो यहूदियों को आशूरह (दस मुहर्रम) का रोज़ा रखते हुए देख कर पूछा तुम आशूरे का रोज़ा क्यों रखते हो? उन्होंने जवाब दिया के यह दिन हमारे नज़दीक नेहायत मुकददस व बाबरकत है कि उस दिन अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी कौम (बनी इस्राईल) को फिरऔन और उसकी कौम के जुल्म से नेजात दिला कर फतह नसीब फरमाई थी इस लिए हम उस दिन को यादगारे फतह व नेजात समझते हैं और ताज़ीमन इस दिन का रोज़ा रखते हैं। उनके इस जवाब पर हुजूर सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया।

فَنَحْنُ اَحَقُّ بِمُوْسٰی مِنْکُمْ فَصَامَہٗ وَاَمَرَ بِصِیَامِہٖ الخ ط)

तर्जमा : पस हम तुम से ज़्यादा हक़दार हैं मूसा अलैहिस्सलाम की फतह व नेजात का दिन मनाने को पस हुजूर अकरम

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने खुद भी रोज़ा रखा और सहाबा को भी उस दिन रोज़ा रखने का हुक्म फरमाया।

(बुखारी,मुस्लिम,अबु दाऊद)

गौर फरमाईयेः आशूरे का दिन बनी इस्राईल के नज़दीक भी मुबारक और हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम के नज़दीक भी मुबारक। बनी इस्राईल उस दिन की सालाना यादगार मनाएँ, ताजीम करें तो हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम उसको बिदअत न फरमाएँ बल्कि खुद भी मनाएँ और सहाबा को भी मनाने का हुक्म फरमाएँ। जिस दिन (यौमे आशूरह) बनी इस्राईल को फिरऔन से नेजात मिली अगर वह दिन मनाना जाईज़ है तो जिस दिन (यौमे मिलाद) बनी नौए इन्सान को कुफ्र व शिर्क और जुल्म व सितम से नेजात मिली वह दिन मनाना किस तरह बिदअत हो सकता है?

मुन्दर्जा बाला दो हदीसों से साबित हुआ के मुकददस दिनों की याद मनाना सुन्नत है मुसतहब है अम्रे मुसतहसन और मनदूब है। उसको बिदअत कहना सरासर ज़यादती और बे इन्साफी है।

कुरआन व हदीस की रौशनी में सहाबा-ए-किराम व सल्फे सालेहीन के अकवाल व अअमाल से यौमे मिलाद मनाना महाफिल कराना जिक्रे मुस्तफा सलल्लाहो अलैहि व सल्लम के चर्चे करना साबित है।

मिलाद और कुरआने हकीम

हुजूर अकरम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की तशरीफ आवरी का ज़िक्र खुद अल्लाह तआला ने फरमाया (मुलाहिजा हो)

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰہُ مِیْثَاقَ النَّبِیّٖنَ لَمَا اٰتَیْتُکُمْ مِّنْ کِتَابٍ وَّ حِکْمَۃٍ ثُمَّ جَآئَکُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَکُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِہٖ وَلَتَنْصُرُنَّہٗ الخ ط

तर्जमाः और (याद करो) जब अल्लाह ने नबियों से अहद लिया कि जो कुछ दिया मैं ने तुम को किताब और हिक्मत से और फिर आए तुम्हारे पास अजमत वाला रसूल, जो तसदीक करने वाला हो उसकी जो तुम्हारे साथ है तो तुम इस पर जरूर इमान लाओगे और उसकी जरूर मदद करोगे।

(सूरह आले इमरान,प0 3 आयत 81)

ثُمَّ جَآءَ کُمْ رَسُوْلٌ ط के अलफाज में अल्लाह तआला ने हुजूर अकरम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की तशरीफ आवरी का ज़िक्र फरमाया।

मालूम हुआ कि ज़िक्रे मुस्तफा हुजूर अकरम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की पहली महफिल "महफिल" अम्बिया है जिसमें ज़िके मिलाद करने वाला अल्लाह तआला और सुनने वाले अम्बियाए किराम थे। उसी तरह अम्बिया व मुरसलीन अलैहिस्सलाम अपने अपने दौर में हुजूर अकरम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की तँशरीफ आवरी के तजकिरे फरमाते रहे यहाँ तक कि हजरत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत की महफिले आम में हुजूर अकरम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की आमद (विलादत) का यूँ चर्चा फरमाया।

وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ یَّاْتِیْ مِنْۢ بَعْدِی اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ط

तर्जमाः ऐ लोगो मैं बशारत देता हूँ तुमको उस रसूल की जो मेरे बाद तशरीफ लाने वाला है जिनका नामे पाक अहमद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है।

(सूरह सफ्फ,प0 28 आयत 6)

आप की आमद का ज़िक्र कुरआन में खुद अल्लाह तआला ने इस तरह फरमाया।

لَقَدْ جَآءَ کُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِکُمْ عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِیْصٌ عَلَیْکُمْ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَؤُفٌ رَّحِیْمٌ ط

तर्जमाः बेशक आ गए तुम्हारे पास तुम में से वह रसूल जिन पर तुम्हारा मुशक्कत में पड़ना गिराँ है जो तुम्हारे खैर ख्वाह हैं मोमिनों पर बहुत ज़्यादा मेहरबान और रहीम हैं।

(सूरह तौबा, प. 11 आयत 128)

मुलाहिजा फरमाएँ इस आयत में लक़द जा अकुम के जुम्ले में विलादत का ज़िक्र है और मिन अन्फ़ुसेकुम के लफ्जों में आप का नसब शरीफ और खानदान का बयान फरमाया गया और अज़ीज़ुन अलैहि मा अनित्तुम में आपके फजाईल खसाईल और सीरते मुकददसा का तजकिरा मौजूद है।

बिहम्देहि तआला महफिले मिलाद शरीफ में हम यही कुछ बयान करते हैं जो कुछ कुरआने मजीद में खुद अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने बयान फरमाया।

> साबित हुआ कि हुजूर अकरम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की आमद के तजकिरे और ज़िक्रे मुस्तफा सलल्लाहो अलैहि व सल्लम के चर्चे करने और महाफिले मिलाद मुनअकिद करवाने की असल कुरआने करीम से साबित है। इस अमल को बिदअत कहने वाले इबरत हासिल करें।

मिलादुन्नबी सलल्लाहो अलैहि व सल्लम और हदीस

खुद हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना मिलाद मनाया

पहली हदीस :–हदीस शरीफ में है के हुजूर अकरम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम हर सोमवार के दिन रोज़ा रखा करते थे।

سُئِلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ عَنْ صَوْمِ یَوْمَ الْاِثْنَیْنِ فَقَالَ فِیْهِ وَلِدْتُ وَفِیْهِ اُنْزِلَ عَلَیَّ وَحْیٌ ط

तर्जमा : हुजूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पीर के दिन के रोज़े के मुतअल्लिक पूछा गया तो आप सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया इसी दिन मैं पैदा हुआ और उसी दिन मुझ पर वही कि इब्तेदा हुई। (मिश्कात शरीफ,किताबुस्सौम)

अलहम्दुलिल्लाह इस हदीस से चन्द बातें मालूम हुई।

1. पीर का रोज़ा इस लिए सुन्नत है कि ये दिन हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादते शरीफा का दिन है।
2. हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पीर के रोज़े का एहतेमाम फरमा कर खुद अपनी विलादत की याद मनाई
3. उम्मत के लिए यौमे विलादत की अहमियत व फजीलत जाहिर फरमाई।
4. दिन मुकर्रर करके यादगार मनाना सुन्नते नबवी सलल्लाहो अलैहि व सल्लम है।
5. विलादत की खुशी में इबादत करना सुन्नत है।

(इबादत ख्वाह बदनी हो जैसे रोज़ा और नवाफिल) ख्वाह माली हो (जैसे सदका, खैरात व तकसीमे शीरनी वगैरह)

गरज कि हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम के मिलाद की खुशी मनाना जाईज़ तरीके से माल खर्च करना इज्हारे शुक्र के लिए दुआ इबादत तिलावत नेअमत वगैरह सब मुस्तहसन उमूर हैं।

दूसरी हदीस :-

فَقَامَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ عَلَی الْمِنْبَرِ فَقَالَ مَنْ اَنَا ط

तर्जमा : सरवरे दोआलाम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम मिम्बर पर तश्रीफ लाए और फरमाया बताओ मैं कौन हुँ? सबने

अर्ज़ किया आप अल्लाह के रसूल हैं (सलल्लाहो अलैहि व सल्लम) फरमाया मैं मुहम्मद हूँ अब्दुल्लाह का बेटा हूँ। अब्दुल मुतल्लिब का पोता हूँ। अल्लाह ने मख्लूक को पैदा किया तो मुझे अच्छे गिरोह में पैदा किया (यानी इन्सान बनाया) इन्सानों में दो गिरोह पैदा किए (अरब व अजम) और मुझे अच्छे गिरोह (अरब) से बनाया फिर अरब में कई कबीले बनाए और मुझको सबसे अच्छे कबीले (कुरैश) में बनाया फिर कुरैश में कई खानदान बनाए और मुझको सबसे अच्छे खानदान (बनू हाशिम) में पैदा किया। पस मैं जाती तौर पर भी सबसे अच्छा हूँ और खनदानी लिहाज से भी सबसे अच्छा हुँ।

(मिश्कात बाब फजाईल सैय्यिदिल मुरसलीन)

तीसरी हदीसः– हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम की महफिल में अपना मिलाद यूँ सुनाया।

بِسَاُخْبِرُکُمْ بِاَوَّلِ اَمْرِیْ دَعْوَۃُ اِبْرَاہِیْمَ وَبَشَارَۃُ عِیْسٰی وَ رُؤْیَا اُمِّیَ الَّتِیْ رَاَتْ حِیْنَ وَضَعَتْنِیْ وَقَدْ خَرَجَ لَھَا نُوْرٌ اَضَاءَ لَھَا مِنْہُ قُصُوْرُ الشَّامِ الخ ط

तर्जमा : यानी मैं तुमको अपने इब्तेदाई मुआमलात की खबर देता हूँ। मैं हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ और हजरत ईसा अलैहिस्सलाम की खुशखबरी हूँ और मैं अपनी वालिदा का वह चश्मदीद मन्ज़र हूँ जो उन्होंने मेरी विलादत के वक्त देखा था कि उनके जिस्मे पाक से एक ऐसा नूर निकला जिस की रौशनी में उन्हें शाम के महल्लात नजर आ गए।

(मिश्कात बाब फजाईले सैय्यिदिल मुरसलीन फस्ले सानी पेज 513)

साबित हुआ : कि हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा के इज्तेमा में खुद अपनी महफिले मिलाद मुनअकिद फरमाई और अपनी विलादत अपना हसब नसब व अपनी

खान्दानी शराफत और तहारत व विलादत का ब्यान फरमा कर अपनी उम्मत को भी मिलाद मनाने की तरगीब दिलाई। **सहाब-ए-किराम रजियल्लाहो अन्हुम भी हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम का मिलाद पढ़ते और मनाते थे।**

पहली हदीस :-

قُلْتُ اَخْبِرْنِیْ عَنْ صِفَةِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فِیْ التَّوْرَاةِ قَالَ اَجَلْ الخ ط

तर्जमा :- हजरत अता बिन यसार रजियल्लाहो अन्ह फरमाते हैं कि मैं हजरत अब्दुल्लाह बिन अस्र व बिन आस रजियल्लाहो अन्हु के पास गया और अर्ज किया कि मुझे हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की वह नात सुनाओ जो तौरात में है तो उन्होंने पढ़कर सुनाई।

(मिश्कात बाब फजाईले सैय्यिदुल मुरसलीन फस्ले अव्वल)

दूसरी हदीस :- हजरत हस्सान बिन साबित रजियल्लाह अन्हु ने हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की शान में नातिया कसीदे लिखे और पढ़े। हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन पर इज्हारे खुश्नूदी फरमाया और उनके लिए यूँ दुआ माँगी।

اَللّٰھُمَّ اَیِّدْہُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ.

तर्जमा :- ऐ अल्लाह (हस्सान) की मदद फरमा रूहुल कुदस के साथ।

हजरत हस्सान रजियल्लाह अन्ह के नातिया कसीदह के दो अश्आर दर्ज जैल हैं।

وَاَحْسَنَ مِنْکَ لَمْ تَرَقَطُّ عَیْنِیْ
وَاَجْمَلُ مِنْکَ لَمْ تَلِدِ النِّسَآءُ
خُلِقْتَ مُبَرَّأً مِّنْ کُلِّ عَیْبٍ
کَاَنَّکَ قَدْ خُلِقْتَ کَمَا تَشَآءُ

इन नातिया अश्आर में हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत और बे ऐब खिलकत का ज़िक्र है। गोया यह कसीदह मिलादुन्नबी सलल्लाहो अलैहि व सल्लम के मौजुअ पर है।

तीसरी हदीस :- हजरत अब्बास रजियल्लाहो अन्हु ने अपने कसीदे में हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम का मिलाद पढ़ा। कसीदे के आखिरी दो शेअर मुलाहिजा हो।

وَاَنْتَ لَمَّا وُلِدْتَ اَشْرَقَتِ
الْاَرْضُ وَضَآءَتْ بِنُوْرِکَ الْاُفُقِ
فَنَحْنُ فِیْ ذَالِکَ الضِّیَآءِ وَفِی
النُّوْرِ وَسُبُلَ الرَّشَادِ نَخْتَرِقُ

तर्जमा : या रसूलल्लाह सलल्लाहो अलैहि व सल्लम जब आपकी विलादत हुई तो आपके नूर से तमाम ज़मीन रौशन हो गई और आपके नूर से तमाम आसमानी फजाएँ पुरनूर हो गई पस़ हम उसी नूर में रुश्दो हिदायत के रास्तों पर चल रहे हैं।

चौथी हदीसः- हजरत उस्मान गनी रजियल्लाहो अन्हु ने हजरत कुबास रजियल्लाहो अन्हु से दरियाफ्त किया कि आप उम्र में बड़े हैं या नबी-ए-अकरम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम। तो उन्होंने जवाब दिया "رسول اللہ ﷺ اَکْبَرُ مِنِّیْ وَاَنَا اَقْدَمُ فِی الْمِیْلَادِ." यानी बड़े तो हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ही हैं और मैं मिलादुन्नबी से पहले हूँ। (तिर्मिजी हिस्सा 2 बाब माजाअ फि मिलाद)

उसी तरह दिगर सहाबा किराम भी वक्तन फौक्तन ज़िक्रे विलादते रसूल सलल्लाहो अलैहि व सल्लम करते रहे उसी चीज़ का नाम महफिले मिलाद है।
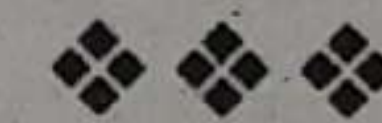
मिलाद मनाना हमेशा से उम्मत के जलीलुल कद्र बुजूर्गों का मामूल रहा है।

❖ हजरत शैख शहाबुददीन अहमद कस्तलानी। (शारेह बुखारी) मवाहिबुल लदुनिया जिल्द 1 पेज 26 मतबुआ मिस्र) में तहरीर फरमाते हैं

وَلَا زَالَ اَهْلُ الْاِسْلَامِ يَحْتَفِلُوْنَ بِشَهْرِ مَوْلِدِهٖ ﷺ

तर्जमा : हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत की खुशी में अहले इस्लाम हमेशा से महाफिले मिलाद मुनअकिद करते चले आए हैं।

❖ इमाम कस्तलानी और उनकी इस किताब के मुतअल्लिक हजरत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहददिस देहलवी फरमाते हैं

"उनका वअज सुनने के लिए दुनिया सिमटती थी वोह अपने वक्त के बे नज़ीर आलिम थे' चुनान्चे मवाहिबुल लदुनिया उन्हीं की तसनीफ है जो अपने बाब में लासानी है।

(बुस्तानुल मुहद्देसीन पेज318)

मिलाद के मुतअल्लिक इमाम रब्बानी हजरत मुजददिदे अल्फेसानी अलैहिर्रहमा का फरमान

"دیگر درباب مولود خوانی اندراج یافته بود" درنفس قرآن خواندن بصوت حسن ودرقصائد نعت ومنقبت خواندن چه مضائقه است؟"

नीज़ आप ने मौलूद ख्वानी के बारे में लिखा था तो महफिले मिलाद में अच्छी आवाज़ से कुरआन पढ़ने और नात व मन्कबत के कसीदे पढ़ने में क्या मुजाईका है?

(मक्तुबाते शरीफ़ा दफ्तर जिल्द 3 पेज 72)

हजरत किब्ला पीर सैय्यद महर अली शाह अलैहिर्रहमा गोलड़वी का फतवा

हजरत गोलड़वी अपने एक फतवा में फरमाते हैं।

"मुसलमानों के लिए खुशी–ए–मिलाद (जुलूस वगैरह) जाईज़ है।

(फतावा महरिया पेज 18)

उलमाए देवबन्द के पीर व मुरशिद हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की अलैहिर्रहमा का फैसला

मशरब फकीर का यह है के महफिले मौलूद में शरीक होता हूँ बल्कि जरिए बरकात समझ कर मुनअकिद करता हूँ और कयाम में लुत्फ व लज़्जत पाता हुँ।

(कुल्लियात इम्दादिया फैसला हफ्त मसअला)

फरमाया कि मिलाद शरीफ तमामी अहले हरमैन करते हैं। उसी कद्र हमारे वास्ते हुज्जत काफी है।(शमाईमे इम्दादिया पेज 47)

मिलाद के मुतअल्लिक़ हजरत शैख अब्दुल हक मुहददिस देहलवी अलैहिर्रहमा का अकीदह व अमल

❖ हजरत शैख मुक्किक अब्दुल हक मुहददिस देहलवी अलैहिर्रहमा के मुतल्लिक हजरत इमाम रब्बानी मुजददिदे अल्फेसानी अलैहिर्रहमा ने अपने एक मक्तूब में यह इज्हारे ख्याल फरमाया है कि

❖ नीज़ मुखालेफीन के पेशवा अशरफ अली थानवी अफाजाते यौमियह में लिखते हैं के हजरत शैख अब्दुल हक मुहददिस देहलवी अलैहिर्रहमा बहुत बड़े शैख हैं। जाहिर के भी बातिन के भी।

❖ अब हजरत शैख अब्दुल हक मुहददिस देहलवी का अकीदा मिलाद शरीफ के बारे में मुलाहिज़ा फरमाएं

وَلَا زَالَ اَهْلُ الْاِسْلَامُ يَحْتَفِلُوْنَ بِشَهْرِ مَوْلِدِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الخ

❖ तर्जमा : अहले इस्लाम हमेशा मिलाद के महीने में महफिलें मुनअकि़द करते रहे।

(मा सबता बिस्सुन्नते पेज 79)

❖ मदारिजुन नबुव्वा जिल्द 2 में अबू लहब के लौन्डी आज़ाद करने के वाकेआ को बयान फरमा कर फरमाते हैं।

"دریں جاسند بیست سر اهل موالید راکه درشب میلاد سرور کنند وبذل اموال نمایند.........الخ

यानी इस वाकेआ में मिलाद मनाने वालों के लिए सनद और दलील है जो कि हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की शबे विलादत में खुशी मनाते और माल खर्च करते हैं।

❖ हजरत शैख मुहक्किक अपनी किताब अखबारुल अखयार के आखिर में बारगाहे खुदावन्दी में मुनाजात करते हुए यूँ रकम तराज़ हैं।

दुआ

तजर्मा:- ऐ अल्लाह मेरा कोई अमल ऐसा नहीं जिसे आपके दरबार में पेश करने के लाईक समझुँ मेरे तमाम आमाल में ऐसा फसादे नियत मौजूद रहता है। अल्बत्ता मुझ फकीर का एक अमल तेरी जाते पाक की इनायत की वजह से बहुत शानदार है और वह यह है कि मजलिसे मिलाद के मौका पर मैं खड़े हो कर सलाम पढ़ता हूँ।

(अखबारूल अखयार मोतर्जिम पेज 624)

❖❖❖

हजरत शाह वलीउल्लाह मुहददिस देहलवी अलैहिर्रहमा का मुकाशिफा

आप फरमाते हैं कि –

मैं मक्का मुअज्जमा में मिलाद के रोज़ हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम के मौलिद मुबारक में था। उस वक्त लोग आप पर दुरूद शरीफ पढ़ते थे और आपकी विलादत का ज़िक्र करते और वह मोअजेज़ात बयान करते थे जो आपकी विलादत के वक्त जाहिर हुए थे। मैं ने उस मजलिस में अनवार व बरकात देखे।

فَتَأَمَّلْتُ تِلْكَ الْاَنْوَارَ فَوَجَدْتُهَا مِنْ قِبَلِ الْمَلَائِكَةِ الْمُتَوَكِّلِيْنَ بِاَمْثَالِ هٰذِهِ الْمُشَاهِدِ الخ

तर्जमा : पस मैंने तअम्मुल किया तो मालूम हुआ कि यह अनवार उन फरिशतों के हैं जो ऐसी मजालिस व मुशाहिद पर मुकर्रर होते हैं। (फयूजुल हरमैन पेज 27)

कुतबुल वासेलीन हजरत शाह अहमद सईद नक्शबन्दी मुजद्दिदी देहलवी अलैहिर्रहमा का फरमान

"مے فرمودند که خواندن مولود شریف وقیام نزدیک ذکر ولادت باسعادت مستحب است"

तर्जमा : आप फरमाया करते थे कि मिलाद शरीफ का पढ़ना और विलादते बासआदत के ज़िक्रे के वक्त कयाम करना मुस्तहब है। (मकामाते सईदिया व मनाकिबे अहमदिया पे.125)

कारेईने किराम गौर फरमाएँ

कि मिलाद शरीफ का अमल कुरआन व सुन्नत से साबित है। फिर सहाबा रिजवानुल्लाहि अलैहिम अजमईन सल्फे सालेहीन

औलियाए किराम और उलमाए मुहददेसीन से मुसलसल मिलाद मनाना साबित है

बाज गैर जिम्मेदार हजरात का यह कौल कि मिलाद के बानी उमर बिन मुल्ला मोहम्मद मुसली और सुलतान अरबल हैं हकीकत के बिलकुल बर अक्स है।

गौर फरमाएँ : मुन्दर्जा बाला इक्तेबासात के पेशे नजर यह तमाम बुजुर्गाने दीन (मिलाद शरीफ मनाने वाले) क्या मुश्रिक व बिदअती थे?

तअज्जुब है

महाफिले मिलाद शरीफ : कयाम व सलाम और जुलूसे ईद मिलादुन्नबी सलल्लाहो अलैहि व सल्लम को शिर्क व बिदअत करार देने वाले खुदा से डरते क्यों नहीं? उन लोगों की तरफ से फहाशी, अय्याशी, सिनेमा बीनी, रक्स व सूद व रिशवत और फिरंगी तहजीब के मुहलिक असरात और कई सैय्येआत व बिदआत के ख़िलाफ कभी कोई मुअस्सिर इक़्दाम एहतेमाम और पम्फलेट वग़ैरह देखने में नहीं आता।

मगर

शाने रिसालत, अजमते विलायत, ज़िक्रे विलादत और मुसलमानाने अहले सुन्नत से उनकी दुश्मनी व नफरत का ये आलम है कि जब ईद मिलादुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मुबारक मौका आता है तो उनकी नाम नेहाद रगे तौहीद फड़क उठती है। और

सितम जरीफी की इन्तेहा है कि

❖ उनके नज़दीक जश्ने दारूल उलुम देवबंद तो जाईज़ है लेकिन जश्ने ईद मिलादुन्नबी सलल्लाहो अलैहि व सल्लम बिदअत है।

❖ यौमे (मुफ्ती) महमूद तो जाईज़ है यौमे मौलूद नाजाईज़ है।

❖ सीरत के जल्से तो दुरुस्त हैं मगर विलादत के जल्से दुरुस्त नहीं।

❖ आखिर उन्हें नबी–ए–करीम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की अजमत व शान से जिद क्यों है?

❖ अपने मौलवियों का इस्तेक्बाल व जुलूस, सालाना इज्तेमाआत व कान्फ्रेंस़ यौमे उसमानी, यौमे अताउल्लाह बुखारी, अहमद अली की सालाना बर्सी काफिरह व मुशरिका इन्द्रा गाँधी की जश्न देवबंद में सदरात व ताजीम, गाँधी व कांग्रेस के जल्सों व जुलूसों में शिर्कत, मिस फातिमा जिनाह के जुलूस व जल्से और कुरआन व हदीस के ख़िलाफ उन्हें सरबराहे मम्लेकत बनाने की कोशिशें देवबंद में साबिक सदर भारत राजेन्द्र प्रसाद के नारे व इस्तेक्बाल और नज्द में मरहबा नहर व रसूलुस्सलाम के नारे व जुलूस (मआजल्लाह) यौमे शौकते इस्लाम और गिलाफे कअबा के जुलूस ये सब जाईज़ व ऐने तौहीद हैं।

मगर

प्यारे महबूब ताजदारे मदीना सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की तशरीफ आवरी की खुशी और आपकी अजमत व शौकत के मुजाहिरे के लिए मुनअकिद होने वाले तमाम जल्से जुलूस बिदअत व नाजाईज़ हैं। (وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ)

हालाँकि पाकिस्तानी अवाम अच्छी तरह जानते हैं के भुट्टू हुकूमत के खिलाफ "कौमी इत्तेहाद" के सिलसिले में तमाम देवबंदी, अहले हदीस उलमा व अवाम ईद मिलाद के जल्सों और जुलूसों में बा कायदा शरीक होते रहे हैं खत्माते शरीफा की शीरनियाँ खाते रहे मज़ाराते मुकददसा पर हाज़रियाँ देते रहे चादरें चढ़ाते रहे।

क्या यह सब कुछ बिदअत और नाजाईज़ समझ कर करते रहे हैं या (इक्तेदार के लालच में अपना मस्लक व अकीदा बदल कर) जाईज़ और सुन्नत समझ कर?

– उल्झा है पाँव यार का जुल्फे दराज़ में

यौमे विलादत और यौमे विसाल की तहक़ीक़

मुखालेफीन की आदत है कि तकरीबन हर साल ईद मिलादुन्नबी सलल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुबारक व मस्ऊद मौका पर मुसलमानाने अहले सुन्नत के ख़िलाफ गैज व गजब का इज्हार शुरू कर देते हैं और अमने आम्मा व इस्तेहकामे मुल्की के ख़िलाफ फित्ना व फसाद का दरवाज़ा खोल देते हैं।

इस साल (1984) ईदे कुरबाँ के मौके पर गुजरानवाला के अहलेहदीस हजरात की तरफ से एक पम्फेलेट शाए किया गया, जिसमें ईद मिलादुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को शिर्क व बिदअत करार दिया गया। इस पम्फेलेट में कोई खास क़ाबिले ज़िक्र बात तो मौजूद नहीं अलबत्ता एक मुगालेता देने की कोशिश की गई है, जिसका जवाब और रद हमारी मज़हबी जिम्मेदारी है। चुनान्चे इस पम्फेलेट में सारा ज़ोर इस बात पर सर्फ किया गया है कि –

"बारह रबिउल अव्वल,,, बाइत्तेफाके अहले इस्लाम' हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम का यौमे वफात है न कि यौमे विलादत। चुँकि हुजूर की वफात के दिन, सहाबा व अहलेबैत रिजवानुल्लाहि अलैहिम अजमईन इन्तेहाई गम्ज़दह थे लेहाजा इस तारिख को खुशी का इज्हार करना, उनके ज़ख्मों पर नमक पाशी के मुतरादिफ है।"

गोया उनके नज़दीक बारह रबिउल अव्वल का यौमे विलादत होना मशकूक और यौमे वफात होना यकीनी है।

हमारा जवाब यह है कि

❖ तारिखे विलादत में मामूली इखतेलाफ के बा वजूद, जम्हूर मुहक्केकीन व अक्सर उलमाए उम्मत के नज़दीक हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम का यौमे विलादत बारह रबिउल अव्वल ही है और उसी पर उम्मत का अमल व तअम्मुल है और उम्मत का तअम्मुल बजाए खुद दलील है।

❖ चूँके शरिअत में बतौर शुक्रिया यादगार व खुशी मनाना जाईज़ और मुस्तहसन है लेकिन तीन दिन से ज़्यादा सोग मनाना मना है। इसलिए अहले इस्लाम व उलमाए उम्मत ने हमेशा यौमे विलादत मनाया है बतौर सोग व गम यौमे वफात मनाना हरगिज़ साबित नहीं हुआ।

❖ हम हयातुन्नबी के काईल हैं ज़िन्दा का सोग व ग़म मनाना अक्ल व दियानत के ख़िलाफ है अगर मुखालेफीन के नज़दीक बारह रबिउल अव्वल विलादत का नहीं बल्कि वफात का दिन है तो वह यह दिन बतौरे यौमे वफात ही मना लिया करें। लेकिन वह बेचारे

न खुदा ही मिला न विसाले सनम
न इधर के रहे न उधर के रहे

अब आईये आईमा–ए–इस्लाम से दरयाफ्त करें कि बारह रबिउल अव्वल हुजूर सैय्यदे आलम नूरे मुजस्सम अहमदे मुजतबा हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत का दिन है या वफात का?पहले यौमे वफात के बारे में तहकीक मुलाहिजा फरमाएँ।

कौले अव्वल

वफाते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यकुम रबिउल अव्वल को हुई

قَالَ يَعْقُوْبُ ابْنُ سُفْيَانَ عَنْ يَحْيىٰ بْنِ بُكَيْرٍ عَنِ اللَّيْثِ اِنَّهٗ قَالَ تُوُفِّىَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ لَيْلَةً خَلَتْ مِنْ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ.

तर्जमा : रिवायत किया याकूब बिन सुफयान ने यहया बिन बुकैर से उन्होंने लैस से उन्होंने कहा कि वफात पाई रसूले पाक सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पीर के दिन रबिउल अव्वल की पहली रात गुज़रने पर।

وَقَالَ فَضْلُ ابْنُ دُكَيْنٍ تُوُفِّىَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ مُسْتَهَلَّ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ.

तर्जमा : कहा फजल इब्ने दुकैन ने वफात पाई रसूले खुदा सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रबिउल अव्वल का चाँद चढ़ते ही पीर के दिन। (अलबिदाया वन्निहाया)

कौले दोम

वफाते रसूल सलल्लाहो अलैहि व सल्लम दो रबिउल अव्वल को हुई

قَالَ الْبَيْهَقِىُّ اَنْبَأَنَا اَبُوْعَبْدِاللّٰهِ الْحَافِظُ قَالَ اَنْبَأَنَا اَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ (اِلٰى آخِرِ السَّنَدِ) وَكَانَ اَوَّلُ يَوْمِ مَرَضَ يَوْمَ السَّبْتِ وَكَانَتْ وَفَاتُهٗ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ لِلَيْلَتَيْنِ خَلَتَا مِنْ شَهْرِ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ.

तर्जमा : कहा इमाम बैहिकी ने हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज ने खबर दी उन्होंने कहा हमें अहमद बिन हम्बल ने खबर दी (सनद के आखिर तक) और पहले दिन जब हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बीमार हुए हफ्ते का दिन था और आपकी वफात पीर के दिन रबिउल अव्वल की दो रातें गुज़रने पर हुई। (अलबिदाया वन्निहाया)

قَالَ الْوَاقِدِىُّ وَقَالَ سَعْدُ بْنُ زَهْرِىْ تُوُفِّىَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ لِلَيْلَتَيْنِ خَلَتَا مِنْ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ (وَرَوَاهُ الْوَاقِدِىُّ عَنْ اَبِىْ مَعْشَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ ابْنِ قَيْسٍ)

तर्जमा : कहा वाकेदी ने और कहा सअद बिन ज़हरी ने कि वफात पाई रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पीर के दिन रबिउल अव्वल की दो रातें गुज़रने पर।

कौले सौम

वफाते रसूल सलल्लाहो अलैहि व सल्लम दस रबिउल अव्वल को हुई

हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहो अन्हु से रिवायत है कि फौत हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पीर के दिन रबिउल अव्वल के दस गुज़रने पर।

कौले चहारुम

वफाते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बारह रबिउल अव्वल को हुई

❖ वफाते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बारह रबिउल अव्वल को हुई। यह कौल मोहम्मद इब्ने इसहाक का है।

(अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 5 पेज 254 से 256)

मजकूरह बाला आईमा–ए–इस्लाम के अकवाल आपने

मुलाहिजा फरमाए जिनमें वफाते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुतल्लिक बाज आईमा ने फरमाया कि तारीखे वफात यकुम रबिउल अव्वल है। बाज आईमा ने फरमाया तारीखे वफात दो रबिउल अव्वल है। बाज आईमा ने फरमाया कि तारीखे वफात दस रबिउल अव्वल को हुई।

❖ मुहम्मद बिन इसहाक की एक रिवायत में वफाते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बारह रबिउल अव्वल को बयान की गई है।

❖ मुखालेफीन कहते हैं कि अहले इस्लाम का इस बात पर इत्तेफाक है कि वफाते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बारह रबिउल अव्वल को हुई।

❖ लेकिन रिवायाते बाला पढ़ कर आपको मालूम हो चुका होगा के सिर्फ एक रिवायात में बारह रबिउल अव्वल को तारीखे वफात बताई गई है। और आठ रिवायात उसके बरअक्स हैं।

❖ अब आखिर में मशहूर सीरत निगार अबुलकासिम सुहैली अलैहिर्रहमा का फैसला सुनिए। आप फरमाते हैं।

لَايُتَصَوَّرُ وُقُوْعُ وَفَاتِهٖ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ ثَانِىْ عَشَرَ رَبِيْعَ الْاَوَّلِ مِنْ سَنَةِ اِحْدٰى عَشَرَ وَذٰلِكَ لِاَنَّهٗ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَقَفَ فِىْ حَجَّةِ الْوِدَاعِ سَنَةَ عَشَرَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَكَانَ اَوَّلُ ذِى الْحَجَّةِ يَوْمَ الْخَمِيْسِ فَعَلٰى تَقْدِيْرِ اَنْ تُحْسَبَ الشُّهُوْرُ تَامَّةً اَوْ نَاقِصَةً اَوْ بَعْضُهَا تَامٌ وَبَعْضُهَا نَاقِصٌ لَايُتَصَوَّرُ اَنْ يَّكُوْنَ يَوْمُ الْاِثْنَيْنِ ثَانِىْ عَشَرَ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ.

तर्जमा : यानी हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफात बारह रबिउल अव्वल को किसी सूरत में भी सही नहीं हो सकती क्योंकि यह अम्र मुसल्लम है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफात रबिउल अव्वल 11 हिजरी बरोज़ सोमवार हुई

और 10 हिजरी का हज यानी हुज्जतुल विदा बरोज़ जुमा हुआ।

पस इस हिसाब से जिलहिज्जा की पहली तारीख बरोज जुमेरात बनती है। इसके आगे रबिउल अव्वल तक तमाम महीनें तीस दिन के शुमार करें या उन्तिस दिन के। या बाज तैंतीस के और बाज उन्तीस के किसी सूरत में भी बारह रबिउल अव्वल को सोमवार का दिन हो ही नहीं सकता।

पस रोज़े रौशन की तरह वाजेह हो गया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफात रबिउल अव्वल की और जौनसी तारीख में भी हो बारह रबिउल अव्वल को हरगिज़ नहीं क्योंकि यह किसी भी हिसाब से दुरूस्त नहीं।

बारह रबिउल अव्वल यौमे वफात नहीं है

चुनान्चे उलमाए देवबंद के पेशवा अशरफ अली थानवी नशरूत्तैय्यब पेज 203 पर रक़मतराज़ हैं।

"और वफात आपकी शुरू रबिउल अव्वल सन 10 हिजरी रोज़ दो शम्बे को कब्ले ज़वाल या बादे ज़वाले आफताब हुई" उसके बाद हाशिये पर लिखा है।

और तारीख़ की तहकीक नहीं हुई और बारहवीं जो मशहूर है वह हिसाब दुरूस्त नहीं होता क्योंकि उस साल जिलहिज्जा नवीं जुम्आ की थी और यौमे वफात दो शम्बे साबित है पस जुम्आ को नवीं जिलहिज्जा होकर बारह रबिउल अव्वल दो शम्बे को किसी तरह नहीं हो सकती।

❖ इस तहक़ीक की रौशनी में मुखालेफीन का यह कहना गलत साबित हुआ कि बारह रबिउल अव्वल को हुज़ूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफात की वजह से सहाबा किराम गम्ज़दह थे।

और यह भी साबित हुआ कि बारह रबिउल अव्वल बिल इत्तेफाक यौमे वफात नहीं है। अलबत्ता बारह रबिउल अव्वल

के यौमे विलादत होने पर उम्मत की अकसरियत मुत्तफिक है। जम्हूर मुहक्केकीन मुअर्रेखीन और उम्मत की अकसरियत का इत्तेफाक है कि यौमे विलादत बारह रबिउल अव्वल रोज़ दो शम्बा (सोमवार) है।

इस सिलसिले में गो रिवायात मुख़्तलिफ है. मगर मशहूर तरीन कौल के मुताबिक जुम्ला अहले इस्लाम के नज़दीक कर्ने अव्वल से ले कर आज तक बारह रबिउल अव्वल ही यौमे विलादत है।

बारह रबी-उल अव्वल तारीखे विलादत है

हवालाजात मुलाहिजा फरमाईये।

हजरत इमाम बैहिकी इमाम कस्तलानी और मुहददिसे देहलवी अलैहिमुर्रहमा के अकवाल

❖ चुनान्चे इमाम अबु बकर अहमद बिन अलहुसैन अलबैहिकी रहमतुल्लाह अलैहि अपनी किताब दलाईलुल नुबुवत में तहरीर करते हैं।

وُلِدَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ عَامَ الْفِيْلِ
لِاثْنَتَىْ عَشَرَةَ لَيْلَةً مَضَتْ مِنْ شَهْرِ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ .

तर्जमा : रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत, सोमवार के दिन आम फील में माह रबिउल अव्वल की बारहवीं रात गुज़रने पर हुई।

❖ उसी तरह इमाम अहमद कस्तलानी रहमतुल्लाह अलैहि (शारेह बुखारी) ज़रकानी अलमवाहिब जिल्द 1 पेज 132 में फरमाते हैं।

وَالْمَشْهُوْرُ اَنَّهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وُلِدَ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ ثَانِىْ
عَشَرَرَبِيْعِ الْاَوَّلِ وَعَلَيْهِ اَهْلُ مَكَّةَ قَدِيْمًا وَّحَدِيْثًا وَفِىْ
زِيَارَتِهِمْ مَوْضِعَ مَوْلِدِهٖ فِىْ هٰذَا الْوَقْتِ .

तर्जमा : मशहूर कौल यही है के पीर के दिन बारह

रबिउल अव्वल को हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत शरिफा हुई इसी बात पर तमाम अहले मक्का अगले पिछले मुत्तफिक हैं कि वह आज तक बारह रबिउल अव्वल को हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मकामे विलादत की ज़यारत करते हैं।

❖ चूँकि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत मक्का मुकर्रमा में हुई लिहाज़ा तारीखे विलादत के मुआमला में उनकी बात को तरजीह देना तकाज़ए अक्ल के ऐन मुताबिक है।

❖ हजरत शैख अब्दुल हक़ मुहदिस देहलवी अलैहिर्रहमा ने मदारिजुन नुबुव्वा में सबसे पहला यह कौल नक्ल किया है कि विलादते नबवी सल्लल्लाहो अलैहि सल्लम बारह रबिउल अव्वल को हुई। बाज और अकवाल नक्ल करने के बाद फरमाते हैं।

कौले अव्वल अशहर व अक्सर अस्त व अमल अहले मक्का बरीं अस्त,ज़यारत करदन ऐशां मौजेअ विलादत रा दरीं शब व ख्वानदाने मौलूद"

तर्जमा : अक्सर अहले इस्लाम के दरमियान मशहूर तरीन कौल यही है कि आपकी विलादत बारह रबिउल अव्वल को हुई। अहले मक्का का इसी पर अमल है हक वह बारह रबिउल अव्वल की रात को हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जाए विलादत की ज़यारत करते हैं और उस रात को मौलूद ख्वानी करते हैं।

अब नाजेरीन खुद फैसला फरमाएँ कि विलादत की तारीख़ में मक्का वालों की बात मोअतबर है या गोजरानवाला अमृतसर और रोपड़ वालों की?

❖ मुस्लिम शरीफ की एक हदीस मुलाहिजा हो।

हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा

तशरीफ लाए तो आपने यहूदियों को देखा के वह दस मुहर्रम का रोज़ा रखते हैं। आपने फरमाया के तुम उस तारीख को रोज़ा क्यों रखते हो? उन्होंने अर्ज़ किया कि यह वह दिन है जिस दिन अल्लाह तआला ने हजरत मूसा अलैहिस्सलाम को फिरऔन के शर से नेजात दी थी और फिरऔन ग़र्क हुआ था। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़्यादा हक़दार हैं, लेहाज़ा हम भी उस तारीख़ को रोज़ा रखेंगे। चुनान्चे आपने मशहूर तंरीख **बैनल-यहूदु** तारीख़ु के मुताबिक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की फतह का दिन था। (मस्लिम शरीफ)

हदीसे बाला से साबित हुआ के किसी बुजुर्ग का दिन मनाना हो तो उसके मनाने वालों में जो तारीख मशहूर हो उसी तारीख को मनाना चाहिए।इस सिलसिले में हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो अहले यहूद की शोहरत को भी काफी जानते हैं मगर मुखालेफीने मिलाद अहले इस्लाम की शोहरत को भी नाकाफी तसव्वुर करते हैं हदीसे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खुली ख़िलाफ वरज़ी के बावजूद फिर भी अपने आपको अहले हदीस कहलाने पर मुसिर हैं।

❖ बारह रबिउल अव्वल को विलादते रसूल सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की शोहरत यूँ ही नहीं हुई मुलाहिजा हो।

اَوْقِيْلَ اِثْنَتَىْ عَشَرَةَ خَلَتْ مِنْهُ نَصَّ عَلَيْهِ ابْنُ اِسْحَاق .

तर्जमा : यानी हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादते बासआदत बारह रबिउल अव्वल को होने पर इब्ने इस्हाक ने नस की है। (अलबिदाया वन्निहाया जि0 3 पे.260)

عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ وَجَابِرٍ اَنَّهُ وُلِدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ فِىْ الثَّانِىْ
عَشَرَ مِنْ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ يَوْمُ الْاِثْنَيْنِ ط

तर्जमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत जाबिर रजियल्लाहो अन्ह से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादते बासआदत बारह रबिउल अव्वल को हुई। (अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 3 पेज 260)

मक्का वाले कहते हैं कि विलादते बासआदत बारह रबिउल अव्वल को हुई और घर वाले भी कहते हैं कि विलादत बारह रबिउल अव्वल को हुई लेकिन मुखालेफीन, बदस्तूर जिद बाज़ी से काम ले रहे हैं। अल्लाह तआला उन्हें हिदायत अता फरमाए।

मज़ीद हवालाजात मुलाहिजा हों

❖ अल्लामा मोहम्मद बिन जरीर तबरी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं के हजरत रिसालते मआब सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत पीर के दिन बारह रबिउल अव्वल को हुई। (तारीखे़ तबरी जिल्द 3 पेज 339)

❖ अल्लामा मोहम्मद बिन इस्हाक मुत्तलबी अलैहिर्रहमा कहते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत बारह रबिउल अव्वल सन आमुल फील में दो शम्बे के दिन हुई।(सीरते इब्न हिशाम जि 1 पेज 153)

❖ तारीख़ इब्ने खुलदून जिल्द 1 पेज 289 में है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत बारह रबिउल अव्वल सन आमुल फील में उस वक्त हुई जब नौशेरवाँ की हुकूमत का चालीसवाँ साल था।

❖ हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान जामी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं। "विलादते वे सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रोज़ दो शम्बा दवाज़दहुम रबिउल अव्वल"

यानी हुजूर की विलादत पीर के दिन बारह रबिउल अव्वल को हुई। (शवाहिदुन नबुता पेज 22)

❖ अस्आफुर्रागेबीन बर हाशिया नूरुल–अबसार जिल्द 1 पेज 6 (मतबुआ मिस्र) में है हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विलादत दो शम्बा के दिन बारह रबिउल अव्वल को सुबह के वक़्त हुई।

❖ अजाईबुल कसस (अल्लामा अब्दुल वाहिद हनफी) पेज 237 मतबुआ नवल किशोर में है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बारह रबिउल अव्वल को दो शमबा के दिन पैदा हुए।

❖ किताब सीरते पाक शाए करदह इदारह मतबूआत पाकिस्तान के पेज 175 में है कि –

"यह सही है कि रबिउल अव्वल में ही हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफात हुई और रबिउल अव्वल ही में विलादत हुई। विलादत की तारीख में इख़्तेलाफ है। ताहम अगर बरहवीं को तारीखे़ विलादत मान ली जाए तो कोई तारीखी कबाहत लाज़िम नहीं आती लेकिन बारहवीं को वफात मानना तो अक्लन व नक्लन हर तरह गलत है।"

उलमाए अहले हदीस के नज़दीक तारीखे विलादत बारह रबिउल अव्वल है

❖ गैर मुकल्लेदीन (अहले हदीस) के पेशवा नवाब सिद्दीक हसन ख़ाँ भोपालवी ने अपनी तसनीफ **"अशशमातुहुल-अंबरीया"** के पेज 7 में लिखा है कि –

विलादत शरीफ मक्का मुकरर्मा में वक्त तुलूए फज्र के रोज़ दो शम्बा शबे दवाज़दहुम रबिउल अव्वल आम फील को हुई। जम्हूर उलमा का कौल यही है। इब्न अलजौज़ी ने इस पर इत्तेफाक नक्ल किया है।

❖❖❖

उलमाए देवबंद के नज़दीक तारीखे़ विलादत 8 या 12 रबिउल अव्वल है

मौलवी अशरफ अली थानवी (देवबंदी) अपनी किताब नशरूत तैय्यब की सातवीं फसल में लिखते हैं।

यौमे तारीख : सब का इत्तेफाक है कि यौमे दो शम्बा था और तारीख में इख़तेलाफ है आठवीं है या बारहवीं।

(कजाफीशशमामा)

गुज़िश्ता औराक में आप देख चुके हैं कि बारह रबिउल अव्वल को रसूल सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफात नहीं हुई।

लेहाज़ा सहाबा किराम व अहले बैते एजाम बारह रबिउल अव्वल को न तो गमज़दह हुए और न रोए।

"अब मैं आपको बताता हूँ कि बारह रबिउल अव्वल को कौन रोया था।

इमाम अबुल कासिम सुहैली अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि इब्लीस चार मर्तबा रोया है।

حِيۡنَ لُعِنَ وَحِيۡنَ اُهۡبِطَ وَحِيۡنَ وُلِدَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ وَحِيۡنَ نُزِلَتۡ فَاتِحَةٌ.

तर्जमा : इब्लीस अपनी ज़िन्दगी में चार बार रोया (पहली बार) उस वक्त जब उस पर लानत की गई और फिर (दूसरी बार) जब उसको रान्द–ए–दरगाह किया गया और फिर (तीसरी बार) जब हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादते बासआदत हुई और (चौथी बार) जब सूरह फातिहा उतारी गई।

(अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 2 पेज 266)

"यही रिवायत खसाईसे कुबरा जिल्द 1 पेज 110 पर भी मौजूद है"

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हु जो कि हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम के कुम्बा के फर्द और

चचाज़ाद भाई हैं, वह फरमाते हैं कि बारह रबिउल अव्वल को हुजूर की विलादत हुई और इमाम सुहैली व दीगर उलमा–ए–मुहद्देसीन फरमाते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत के दिन शैतान रोया था।

अब बारह रबिउल अव्वल को गम का दिन कह कर शरीके गम होने वाले खुद सोच लें के वह किसके शरीके ग़म हैं।

बसूरत दिगर अगर मान भी लिया जाए के बारह रबिउल अव्वल यौमे विसाल है तो फिर भी उस दिन जुलूस और महफिले मिलाद का एहतेमाम करने में कुछ मुजाईका नहीं क्योंकि मकबूलाने बारगाहे खुदावन्दी के विसाल का दिन खुशी और उर्स का दिन होता है कि वह उस दिन दुनिया के कैद खाने से निकल कर अपने महबूबे हकीकी से वासिल होते हैं। लेहाजा महबूब से विसाल के दिन खुशी होती है न कि ग़म।

हो सकता है कि यौमे विलादत ही के यौमे विसाल होने में ये हिकमत पोशीदह हो कि उश्शाके रसूल सलल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए उस दिन रन्ज व अफसोस का फुकदान और खुशी व मुसरर्त का गलबा हो।

"नीज़ हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम का इरशाद है"

حَيَاتِیْ خَيْرٌ لَّكُمْ وَمَمَاتِیْ خَيْرٌ لَّكُمْ.

तर्जमा : मेरी जाहिरी ज़िन्दगी भी तुम्हारे लिए खैर है और मेरी वफात भी तुम्हारे लिए खैर है। (मुस्नदे बजाज़ अशिफा काजी अयाज)

साबित हुआ कि उम्मत के हकिमें हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत और रिहलत दोनों रहमत हैं। अब देखना तो यह है कि उन दोनों में बड़ी रहमत कौन सी है?तो जाहिर है कि आपका मिलाद उम्मत के लिए सबसे बड़ी रहमत

और नेअमत है। लिहाज़ा उसी का हुक्म ग़ालिब रहेगा, क्योंकि आपका विसाल ऐसा नहीं है जो उम्मत से आपका तअल्लुक और रिश्ता खत्म कर देगा बल्कि आपका फैज़ाने रिसालत ता कयामत तक जारी व सारी है।

"हज़रत मुल्ला अली कारी अलैर्हिरहमा शरहुश्शिफा में फरमाते हैं"

لَيْسَ هُنَاكَ مَوْتٌ وَّلَا وَفَاتٌ بَلْ اِنْتِقَالٌ مِّنْ حَالٍ اِلٰى حَالٍ.

तर्जमा : यानी हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मआमलात में मौत और वफात का आम तसव्वुर मुराद नहीं बल्कि यहाँ एक हाल से दूसरे हाल की तरफ मुन्तकिल होना मुराद है।

हजरत अल्लामा जलालुद्दीन सियुती फरमाते हैं कि शरीअत ने बच्चा की विलादत के मौका पर अल्लाह के शुक्र और खुशी के इज्हार के लिए अक़ीक़ा का हुक्म दिया है लेकिन वफात के वक्त ऐसी किसी चीज़ का हुक्म नहीं।

عَلٰى اَنَّهٗ مُحْسِنٌ فِیْ هٰذَا الشَّهْرِ اِظْهَارَ الْفَرْحِ بِوِلَادَتِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دُوْنَ اِظْهَارِ الْحُزْنِ فِيْهِ بِوَفَاتِهٖ.

(अलहावी लिलफतावा)

यौमे विलादत को यौमे ईद कहना दुरूस्त है

मुन्केरीने मिलाद अवाम को अक्सर यह मुगालता देते हैं कि इस्लाम में दो ईदें (ईदुल फित्र और ईदुल जुहा) है यह तीसरी ईद (ईदे मिलाद) कहाँ से आ गई?

चूनान्चे उनके इस मुगालते का मुकम्मल और शाफी जवाब मुलाहिजा हो।

बुखारी व मस्लिम शरीफ में है कि,

जब आयत **अल्यौमा अक्मल्तु लकुम दीनकुम अलख़।** नाज़िल हुई तो एक यहूदी ने अमीरूल मोमेनीन सैय्यिदिना

फारूक आ'जम रज़ियल्लाहो अन्हु से कहा अगर ये आयत हम पर नाज़िल होती तो हम उसके नुजूल के दिन ईद मनाते।

قَالَ عُمَرُ قَدْ عَرَفْنَا ذَالِكَ الْيَوْمَ وَالْمَكَانَ وَاَشَارَ عُمَرُ اَنَّ ذٰلِكَ الْيَوْمَ كَانَ عِيْدًا.

तर्जमा : हजरत उमर फारूक रज़ियल्लाहो अन्हु ने फरमाया कि हमें वह दिन मालूम है (वह दिन जुम्आ व अर्फा था और मकामे अरफात था) हजरत उमर रज़ियल्लाहो अन्हु ने गोया इशारा किया कि वह दिन हमारे लिए वाकई ईद का दिन है।

❖ " इस दिन हमारी दो ईदें जमा थीं (जुम्आ व अर्फा यौमे हज)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहो अन्हु ने फरमाया अरफात में उस दिन पाँच ईदें जमा हो गई थीं। जुम्आ,अर्फा,यहूद की ईद, नसारा की ईद, मजूस की ईद।

❖ "हजरत इमाम अहमद बिन मुहम्मद कस्तलानी मिस्री फरमाते हैं कि"

हर जुम्आ मुसलमानों की ईद इस लिए है कि उस दिन हजरत आदम अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

فَمَا بَالُ السَّاعَةِ الَّتِیْ وُلِدَ فِيْهَا سَيِّدُ الْمُرْسَلِيْنَ .

तो जिस दिन सैय्यिदुल मरसेलीन पैदा हुए इस दिन ईद होने मैं क्या शक है?

पस मालूम हुआ के ईदुल फित्र और ईदुल अज्हा के सेवा हज का दिन बारह रबिउल अव्वल का दिन और जुम्आ का दिन मुसलमानों की ईदें हैं और गौर करें के सिर्फ जुम्आ साल में 52 हुए बाकी दो मशहूर ईदें (ईदुल फित्र व ईदुल अज्हा) हज का दिन बारह रबिउल अव्वल का दिन मिला कर साल में मुसलमानों की तकरीबन 56 ईदें बन्ती हैं। मुखालेफीन बेचारे तो सिर्फ दो ईदें लिए बैठे हैं लेकिन यहाँ मुआमला बरअक्स है।

तअस्सुब से अलग होकर

सोचें के हजरत ईसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की थी।

رَبَّنَا اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ......الخ

तर्जमा : ए अल्लाह हमारे ऊपर आसमान से दस्तर ख्वान (खाना) नाज़िल फरमा, ताकि हमारे पहले और पिछलों की ईद बन जाए और तेरी तरफ से दलील व निशानी।

उलमाए उसूलीन ने कायदा बयान फरमाया है कि कुरआने पाक, सबका शरिअतों का जो किस्सा हम पर बयान करे और उसकी तरदीद न करे वह हमारे लिए हुज्जत है। (नूरूल अनवार,हुसामी)

लेहाजा

बतौरे हुज्जते तामा के साबित हुआ कि अगर बनी इस्राईल, खाना मिलने के दिनों को ईद कह सकते हैं तो मुसलमान भी महबूबे खुदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तशरीफ आवरी के दिनों को ईद कह सकते हैं।

क्या खाना मिलने की खुशी रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत की खुशी से ज़्यादा है? فَاِلَی اللّٰهِ الْمُشْتَكٰی

अगर कोई यह ऐतराज करे कि शरिअते ईसवी मन्सूख है इस पर कयास ठीक नहीं तो हम जवाब देंगे कि यह दुआ अखबार से है। नस्ख इन्शा में होता है न कि अखबार में। (कुतुबे उसूल व तफसीर) लेहाजा ये मन्सूख नहीं। فَافْهَمْ وَتَدَبَّرْ.

बसूरते दिगर मुखालेफीन के पास उसके नस्ख की कोई दलील नहीं। अगर है तो पेश करें।

هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ط

महफिले मिलाद की असल हैसियत

महफिले मिलाद की असल हैसियत यह है कि तिलावते

कुरआन, नात ख्वानी के एलावा हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत का जिक्र होता है, फजाईल व मनाकिब बयान होते हैं इस्लाम की तालीमात पर तकारीर होती है, सलात व सलाम होता है और ताजीमे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शरअन मतलूब है जैसा कि हुक्मे कुरआनी है। وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ

तर्जमा : और इस (अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की मदद करो और ताजीम व तकरीम करो।

साहिबे रूहुल बयान ने इस आयत के तहत लिखा है।

وَمِنْ تَعْظِيْمِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَمَلُ الْمَوْلِدِ..الخ

तर्जमा : यानी मिलाद मनाना हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की ताजीम में दाखिल है।

बाज लोग कह देते हैं के हम मिलाद की असलियत शरअ से साबित मानते हैं लेकिन मौजूदा हैअते कजाई और सूरते मजमूई पर हमें ए'तेराज है।

तो उनकी खिदमत में अर्ज है कि जिस चीज़ की असलियत शरअ से साबित हो और उसकी हैबत इन्फेरादी कुरआन या सुन्नत में मौजूद न हो वह किसी हैअते मुबाहा (जाईज़ शकल व सूरत) के लाहिक होने से ममनूअ नहीं हो सकती।

बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जो अपनी मौजूदा सूरत में हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम या सहाबा किराम के दौर में नहीं थी और बाद में निकाली गई मगर आजकल सारे मुसलमान उन्हें कारे खैर समझते हैं मिसाल के तौर पर।

1. पुख्ता मसाजिद (बलन्द मिनार औरर मेहराब)
2. दीनी मदारिस और उनका निसाबे तालीम।
3. कुरआने पाक पर ए'राब और पारों, रूकुओं और रमूज़े औकाफ की तअयीन।

4. मुसाफिर खाना।
5. अहादिस की किताबें, अस्नाद व अक्साम वगैरह।
6. मुसाफहा बवक्ते रुख्सत।
7. अज़ान के लिए मिम्बर।
8. वअज व तबलीग का मुरव्वजा तरीका (मसलन इशतेहार छाप कर स्टेज बिछा कर लाउड स्पीकर लगा कर लेहन व सुरूद के अन्दाज़ में या चन्द माह के तबलीगी चिल्ले कटवाकर)
9. सीरत कानफ्रेन्सें।
10. सियासी या दीनी जुलूस (यौमे शौकते इस्लाम गेलाफे कअबा और निज़ामे मुस्तफा सलल्लाहो अलैहि व सल्लम के जुलूस।
11. नमाज़ में ज़बान से नियत करना
12. ज़कात में मौजूदा सिक्कए राइजुल वक्त अदा करना
13. बजरिआ हवाई जहाज़ हज करना
14. तदवीने कुतुब और तरतीबे दलाईल
15. तरीकत के चारों सलासिल के मशागिल, मराकबे, वजाईफ और जिक्र की अक्साम
16. शरिअत के चारों सलासिल और उनके इजतेहादी कारनामे वगैरहुम

तो मुखालेफीने मिलाद जिस दलील से उन तमाम मजकूरा बाला उमूर को जाईज़ सही और मुस्तहसन कहते हैं (हालाँकि यह तमाम उमूर जमान-ए-नबवी सलल्लाहो अलैहि व सल्लम या कुरूने उला में न थे) क्या बतौरे इल्ज़ाम खस्म उसी दलील से महफिले मिलाद और जुलूस का सही और दुरूस्त होना साबित नहीं होता?(जबकि तहकीकी दलाईल पेश किए जा चुके हैं)

इल्मे उसूल का क़ायदा है जिसे शामी और इब्ने हुमाम वगैरहुमा ने बयान किया है।

اَلْمُخْتَارُ عِنْدَ الْجَمْهُوْرِ مِنَ الشَّافِعِيَّةِ وَالْحَنَفِيَّةِ اَنَّ الْاَصْلَ فِى الْاَشْيَاءِ الْاِبَاحَةُ.

तर्जमा : जमहूर शाफिया और हनफिया के नज़दीक मुखतार यह है कि अस्ल तमाम अशिया में अबाहत और जवाज़ है।

जैसा के "मिरक़ात शरह मशकूफ़ते और अश्तुल्लम्आत।" में भी यही मजकूर है पस साबित हुआ कि जिस चीज़ की मुमानअत पर दलीले शरई न हो वह जाईज़ व मुबाह है।

तो जो शख्स जिस चीज़ या फेल को नाजाईज़ हराम या मकरूह कहता है इस पर वाजिब है कि अपने दावा पर दलीले शरई काईम करे और जाईज़ व मुबाह कहने वालों को हरगिज़ दलील की हाजत नहीं क्योंकि इस चीज़ की मुमानेअत पर कोई दलीले शरई न होना ही जवाज़ की दलील काफी है।

जामेअ तिर्मिजी व सुनने इब्ने माजा में हजरत सैय्यिदना सलमान फारसी रजियल्लाहो अन्ह से मरवी है के हुजूर सरवरे आलम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया।

اَلْحَلَالُ مَا اَحَلَّ اللّٰهُ فِىْ كِتَابِهٖ وَالْحَرَامُ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فِىْ كِتَابِهٖ وَمَا سَكَتَ عَنْهُ فَهُوَ مِمَّا عَفَا عَنْهُ الخ

तर्जमा : हलाल वह है जो खुदा ने अपनी किताब में हलाल किया और हराम वह है जो खुदा ने अपनी किताब में हराम किया और जिस पर सुकूत फरमाया वह अल्लाह की तरफ से मुआफ है उसके करने पर कुछ गुनाह नहीं।

इस हदीस की रौशनी में साबित हुआ कि उमूरे मुतनाज़ा फीहा (मिलाद शरीफ व जुलूस व क़याम व सलाम) के जवाज़ पर हमें कोई दलील कायम करने की जरूरत नहीं। शरअ से मुमानेअत साबित न होना ही हमारे लिए दलील है।

लेहाजा हम (अहले सुन्नत) से दलील व सनद माँगना मुखालेफीन की बे इल्मी व जिहालत है। हम कहते हैं तुम तो

मिलाद व जुलूस को नाजाईज़ व हराम व बिदअते सैय्येआ कहते हो तुम सुबूत दो कि खुदा और रसूल ने उन चीज़ों को कहाँ नाजाईज़ व हराम फरमाया है? और अगर सुबूत न दो और इन्शाअल्लाह हरगिज़ न दे सकोगे तो याद रखो तुमने अल्लाह व रसूल पर इफ्तेरा बाँधा है।

अहादिसे मुबारिका और उलमाए इस्लाम की तालीमात व तस्रीहात के मुताबिक यह जरूरी नहीं कि हर एहदास (नई चीज़) बिदअत हो बल्कि एहदास फिददीन बिदअत है।

हुजूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया।

مَنْ اَحْدَثَ فِىْ اَمْرِنَا هٰذَا مَا لَيْسَ مِنْهُ فَهُوَ رَدٌّ.

तर्जमा : जिसने हमारे दीन में कोई नई चीज़ इजाद की जो दीन से नहीं तो वह मरदूद है इस हदीस में हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने खास उसी बात को मरदूद फरमाया है जो दीन के ख़िलाफ हो, हर नई बात को मना नहीं फरमाया। अगर आप हर नई बात को नापसन्द फरमाते तो "मा लैसा मिन्हु" की कैद न बढ़ाते।

बाज कम फहम लोग कहते हैं कि हर नई बात ख्वाह दीन के मुख़ालिफ हो या मवाफिक सब मना है ह्राशा व कल्ला यह बात गलत है।

असल बात यह है कि जो नई चीज़ ख़िलाफे दीन हो मना है और जो नई चीज़ दीन के ख़िलाफ न हो बल्कि मददगार हो वह हरगिज़ मना नहीं बल्कि उस पर हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अज्र व सवाब का वादा फरमाया है। हदीस मुलाहिजा हो।

مَنْ سَنَّ فِى الْاِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَعُمِلَ بِهَا بَعْدَهٗ كُتِبَ لَهٗ مِثْلُ اَجْرِ مَنْ عَمِلَ بِهَا

तर्जमा : जिसने कोई अच्छा तरीका इस्लाम में जारी किया, फिर उसके बाद उस तरीके पर लोगों ने अमल किया तो तरीका जारी करने वाले को इस पर अमल करने वाले के बराबर सवाब होगा। (मुस्लिम शरीफ)

हज़रत हाजी इम्दादुल्लाह मुहजिर मक्की अलैहिर्रहमा **फैसला हफ्त मस्अला** में फरमाते हैं।

"इन्साफ यह है कि बिदअत उसको कहते हैं कि गैरे दीन को दीन में दाखिल कर लिया जाए।"

मुखालेफीन अगर अकाबेरीने उम्मत की तशरीहात को नहीं मानते तो कम अज़ कम अपने पीर व मुरशिद हजरत हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की अलैर्हिरहमा का इरशाद तो मान लें।

–शायद कि उतर जाए तेरे दिल में मेरी बात

हर्फ़े आख़िर

बिहमदेहि तआला मिलाद शरीफ के मस्अले पर कुरआन व हदीस, आसारे सहाबा व ताबेईन, अकवाले उलमा व मुहददेसीन व तअम्मुले उम्मत की रौशनी में दलाईले काहेरह बयान हुए। उम्मीदे वासिक है कि कारेईने किराम को उस इल्मी मवाद से इत्मिनाने कल्बी हासिल होगा और मआनेदीन की फैलाई हुई गलत फहमिया दूर हो जाएँगी।

ईद मिलादुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम
की इस्लामी व शरई हैसियत के सिलसिले में

हमारा मौकिफ ये है! कि मुतलकन जिक्रे मिलाद शरीफ, कुरआन व सुन्नत की रौशनी में शरअन महमूद और मनदूब है। आसारे सहाबा व सल्फे सालेहीन से "मिलाद शरीफ" की हैसियत इन्फेरादी और एबाहते असली साबित है किसी हैअत मुबाहा इज्तेमाईया के लाहिक व आरिज होने से इसको बिदअत नहीं कहा जा सकता। खुसूसन जबकि महाफिले मिलाद व जुलूस से मक्सूद दा'वते इलल्लाह तबलीगे दीन और बयाने सीरत व मोअजेज़ात हो तो यह अमल न सिर्फ जाईज़ बल्कि मुस्तहब करार पाता है। नीज़ यह एक तारीख़ी हकीकत है कि

इब्तेदा से ले कर आज तक अकाबेरीने उलमाए उम्मत की वाजेह अक्सरियत अमले मिलाद पर मुत्तफिक रही है और आईम्मा–ए–इस्लाम अपने कौल व अमल से उसकी मुसलसल ताईद व तसदीक फरमाते रहे हैं।

जिन हजरात ने मुरव्वजा महाफिले मिलाद, व जुलूस–ए–ईद मिलादुन्नबी सलल्लाहो अलैहि व सल्लम का इन्कार किया है। उसकी बुनियादी वजह इस किस्म के इज्तेमाआत में मुन्केरात, मुहर्रमात और बिदआत का इर्तेकाब है वह असल मिलाद के मुनकिर व मुखालिफ हरगिज़ नहीं हैं। और यही उलमाए अहले सुन्नत का मौकिफ है। चुनान्चे आखिर में हम अहले सुन्नत के नज़दीक महाफिले मिलाद व जुलूस की पसन्दीदा और नापसन्दीदा सूरतों का इज्माली खाका पेश कर रहे हैं ताकि हक वाजेह हो जाए और बातिल का गुबार दूर हो जाए।

فَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى ذٰلِكَ.

मुबाहात व मुस्तहब्बात

❖ तिलावते कुरआने हकीम

❖ नात सरवरे काईनात सलल्लाहो अलैहि व सल्लम

❖ सलात व सलाम और कयाम

❖ तौहीद व रिसालत, सीरत व मिलाद के मौजूआत पर किताब व सुन्नत की रौशनी में उलमा की तकारीर।

❖ विलादते मुकद्दसा के मुस्तनद वाकेआत और रजाअते मुबारिका के सही हालात का बयान और हदिया–ए–ईसाले सवाब।

❖ अदइया मासूरह व गैर मासूरह

❖ इज़्हारे फरहत व सरूर बफ़हवा–ए–हुक्मे कुरआनी, **"फबेज़ालिका फ़लयफ़रहू"** और इस सिलसिले में सदकाते नाफेला और दा'वाते सालेहा का एहतेमाम।

❖ ताजीमे रिसालत व इत्तेबा–ए–सुन्नत का इल्तेज़ाम।

❖ मसाजिद या महाफिल को बनिय्यते ताजीम ज़िक्रे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुनासिब रौशनी (चरागाँ) और खुशबु व इत्र वगैरह से मोजैम्बर व मुजैय्यन करना।

❖ साफ और नए कपड़े पहनना लोगों को खाना खिलाना और पानी पिलाना।

❖ मिलाद की खुशी में (पीर के दीन) नफ्ली इबादात मसलन रोज़ा या सदकात व खैरात का एहतेमाम करना।

"وغيرها من الحسنات والخيرات رزقنا الله اياها"

मुन्किरात व बिदआत

❖ ज़िक्रे मिलाद के लिए ग्यारहवीं या बारहवीं तारीख को ही श्रअन मख्सूस व मसनून ख्याल करना, और दिगर अय्याम में नजाईज़ समझना

❖ रियाकारी, नुमाईश और हुसूले अगराज़े नफसानी की नियत से उन तकरीबात का एहतेमाम करना

❖ बेजा उसराफ व फुजूल खर्ची करना मसलन पहाड़ियाँ बनाना, गलियों और बाज़ारों में बे मक्सद चरागाँ करना। खास कर जबकि ऐसे चरागाँ से तरह तरह के फितने जन्म ले रहे हो।

❖ मर्दों और औरतों के बेपर्दह मखलूत इज्तेमाआत मुनअकिद करवाना।

❖ रिवायात मौजुआ, काजेबा और मनघड़त किस्से बयान करना

❖ उसी तरह जल्से और जुलूसों में गाने, बाजे, ढ़ोल, तमाशे, चम्टे, सारंगी मुरव्वजा कव्वाली, तबले, भंगड़े और धमालें डालने का एहतेमाम व इन्सेराम करना।

"وغيرها من الخرافات والبدعات اعاذنا الله اياها"

❖❖❖

जरूरी गुज़ारिश

उलमा व मशाईखे अहले सुन्नत और आमतुल मुस्लेमीन की खिदमत में गुज़ारिश है कि मिलाद शरीफ के तमाम इज्तेमाआत व तकरीबात को सुन्नत और शरिअत की रौशनी में मुरत्तब व मुनज्जम फरमाएँ।

और इस पाकीज़ा अमल को (जिसकी बुनियाद इश्के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर है) हर किस्म की बिदआत व मुनकिरात से पाक रखने के लिए अमली जेहाद फरमाएँ और उस हकीकत का बर्मिला ऐलान फरमादें। कि ग़ैर शरई हरकात और दिगर खुराफात का मुजाहिरा करने वाले लोग काबिले नफरत व मलामत हैं और हम उन लोगों के नापसन्दीदा अफआल व अ'माल की कोई जिम्मेदारी कबूल नहीं कर सकते।

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْحِكْمَةَ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ.

र्तजमाः–बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान हुआ मुसलमानों पर कि उनमें उन्हींमें से एक रसूल भेजा जो उन पर उसकी आयतें पढ़ता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब व हिक्मत सिखाता है' और वह जरूर इससे पहले गुमराही में थे।

(सूरह आले इमरान प0 4 आयत 164)

❖❖❖

हुजर-ए- नबवी के अन्दर नक्श नातें

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल–करीम

ऐ गुम्बदे ख़िजरा के मकीं

हजरत शैख़े तरीकत आलिमे जलील आरिफे बिल्लाह शैख अब्दुर्रहीम अलबरई यमन के एक आशिके रसूल बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। इस सरज़मीन पर जहाँ हजरत ओवैस करनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसे मुहिब्बाने रसूल पैदा हुए वहाँ हर ज़माना में कोई न कोई वारफतह शौक होता रहा है जिसके सूज़े दरू से हज़ारों बन्दगाने खुदा ने मुहब्बत की रौशनी और इमान की हरारत और जाते नबवी सलल्लाहो अलैहि व सल्लम से वाबिस्तगी की दौलत हासिल की है। अहले यमन शैख अब्दुर्रहीम अलबरई की मुनाजातों और दुरूद व सलाम से मुअत्तर नजमों को बड़े शौक व अकीदत से पढा करते हैं। उनका मुफस्सिल तजकिरा अरबी की नातिया शाईरी में मौजूद है। आपने हरमे नबवी सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़यारत के लिए जो सलातो व सलाम लिखा है, उसका उनवान है। इस कसीदे के मुन्तखब अशआर का तर्जुमा हस्बे जैल है।

1. शहर मदीना में नूर से मामूर कब्र वाले ऐ मेरी आरज़ुओं के किबला, मेरी तमन्नाओं के हासिल!
2. ऐ वह जाते गिरामी जिनका दर मुशकिलात में मेरा वसीला और मसाईब की योरिश के वक्त मेरा आखिरी ठिकाना है।

3. ऐ मेरी उम्मीदों के मरकज़, रन्ज व गम ख्वार, रन्ज व गम की शदीद घड़ियों में जिनके (शफाअत) से ढ़ारस रहती है
4. ऐ वह जिनकी सखावत सारे आलम पर मुहीत है। सखावत भी ऐसी जैसे मुसलाधार बारिश हो और जिस बारिश का हर कतरह हज़ारों नेअमतों को अपने जलवा में लिए हुए हो।
5. ऐ नबी–ए–रहमत शाफ–ए–उम्मत सारे आलम के लिए सर पनाह, मशरिक मगरिब में बसने वालों के लिए आपका दामन जाए पनाह है।
6. ऐ वह जात जिससे हम हर तरह भीक पाने की आस लगाए हुए हैं और जिनके दरे आली पर आकर सहारा ढून्डते हैं।
7. ऐ वह जो मेहरबान तर, पाकीज़ा तर और मुन्तखब तरीन आपका कुदरते इलाही का सर बस्ता राज़ हैं। आपका वजूद पाकीज़ा और आपका खानदान (आबाओ अजदाद) पाकीज़ा तर थे।
8. ऐ रातों रात जलीलुल कद्र बुराक पर सवार होकर मक्का से मस्जिदे अक्सा तक जाने वाले मुसाफिर!
9. आपका इस्तक्बाले मलाईका ने पुरजोश खैर मक्दम के साथ किया।
10. आपकी मन्ज़िल सिदरतुल मुन्तहा थी और यह एक खास फजल व करम था अल्लाह का जो आप के लिए

पहले ही से मुकद्दर था।

11. आपका इशतियाक खुद अर्श व कुर्सी को था और आपको करीब से करीब तर बुलाया गया।
12. आपकी वह अजमत जिसको देखकर इन्सान शश्दर रह जाता है यह है कि आपका अलम अर्शे आ'जम पर नसब किया गया।
13. आपके लिए तमाम पर्दे उठा दिए गए और शश जेहात को आपकी तरफ झुका दिया गया और मुन्तखब करदह हस्ती को मुन्तखब करने वाले(खुदा) के नूर ने हर तरफ से ढ़क लिया।
14. आपको वसीला बनाया गया है। हर फजीलत से नवाज़ा गया है। आपको हक है की फख्र करें कि हर मुस्तहिक सज़ा को आपके वसीला व शफ़ाअत से बख्श दिया जाएगा।
15. शीरीं हौजे कौसर पर आपका मकाम, मकामे हम्द होगा। जिसके साया में तमाम अम्बियाए किराम पनाह लेंगे।
16. एक नाख्वान्दह कौम की तरफ आपको नबी बना कर मबउस किया गया जो काईनात पर मुहीत हो गया।
17. आपके मुअजेज़ात तो आपकी पैदाईश से पहले ही जाहिर होना शुरू हो गए थे। आपकी तिफ्ली के मोअजेज़ात भी साबित हैं। और जब आप जवान हुए,और जब बुढ़ापे की उम्र को पहुँचे (कोई ज़माना मुअजेज़ात के जहूर से खाली नहीं रहा)

18. आपने वहीये खुदावन्दी को पढ़कर सुनाया। लोगों ने इस नेअमत से फायदा उठाया और ईमान लाए और ऐसे महरूम बख्त भी थे जो इन्कार पर काईम रहे।
19. अलहम्दुलिल्लाह कुरआन शरिअत का जामेअ है। अल्लाह तआला हमारा परवर दिगार है और हजरत आमना (रजियल्लाहो तआला अन्हुमा) का लख्ते जिगर हमारा पैगम्बर है।
20. जाते अहमद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तुफैल हक वाजेह होकर हम सबके सामने आया और मजहबे इस्लाम सबसे आ'ला व अरफअ दीन बनकर उभरा।
21. मेरे आका व मौला आपको अपना हामी व नासिर जान कर मैंने आपसे उम्मीद कायम की है कि हर रोज़ की नित नई मुसीबत से और ग़ददारे ज़माना के शदाईद से नेजात पा सकूँ।
22. आप हेदायत के मिनारा हैं। आपकी ख़िदमत में इस नजराना मदह को हमने वसीला बनाया है और वसीला ढूँढने वाले के लिए सबसे बड़ा सहारा तो खुद आप का ही है।
23. आप का एक हकीर गुलाम है, मदह ख्वाँ और दरयुज़ह गर है। इसके लिए दुआ फरमाइये कि उसकि मुसीबतें दूर हों क्योंकि आपसे इल्तेमास व इल्तेजा करने वाला महरूम नहीं रहता।
24. और जहन्नम की भडकती हुई आग से महफूज रहने के

लिए परवाना नेजात लिख दीजए, खुद उसके लिए और उसके वालिदैन के लिए।

25. इस कसीदा मदह के तुफैल अर्ब्दुरहीम को दोनों जहाँ की सरफराज़ी अता कीजए क्योंकि उसने दिलसे ये नज्म लिखी है।

26. ऐ बलन्द मकाम वाले खुदाए जुलजलाल आप पर अपनी रहमतें बरसाए और बेहतर से बेहतर दुरूद व सलाम का हदिया पहुँचाए।

27. और आपके सहाबा–ए–किराम और सर बलन्द आल पर जिनमें हर एक साहबे फजल व एहसान थे।

❖❖❖

हुजर-ए-मुबारक के अन्दर दरो दीवार पर नक्श किया हुआ कसीदा।

अय्युब सबरी बासा ने "मिरअतुल हरमैन" में लिखा है कि सुलतान अब्दुल हमीद बिन सुलतान अहमद(1191हिजरी) का यह कसीदह रौज– ए–अनवर के अन्दर किबला के जानिब दिवार पर (जालियों से उपर) नक्श किया हुआ है।

1. या सैय्यिदी या रसूलल्लाह सलल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी दस्तगीरी कीजिए। आपके सेवा मेरा कोई नहीं है और ना मैं किसी की तरफ मुड़कर देखता हुँ।

2. सारी काईनात में हिदायत का नूर आप ही हैं। राज़े सखावत तो आपही की जात है! ऐ वह जात जिस पर भरोसा किया जाए। तौजीह– दूसरे मिसरा का आखिरी

टुकड़ा या ख़ैरू मो'तमद का मतलब ये है कि अर्जी गुज़ार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मुखातब करके कह रहा है कि आप ही की ज़ात वह है जिस पर ए,तेमाद किया जाए।

3. बिलाशक व शुब्हा सारी मखलुकात के लिए फरयाद रस आप ही हैं और अल्लाह की तरफ सारे आलम को रास्ता बताने वाले आप हैं।

4. ऐ वह जाते पाक जिसने अल्लाह तआला की हम्द का हक तन्हा अदा किया। उस बुज़र्ग व बरतर की हम्द जो तन्हा है जो न पैदा किया गया है और न उसने किसी को जन्म दिया।

5. ऐ वह जात जिसकी दो उँगलियों से पानी की लहरें उबल पड़ीं, जिससे पूरी फौज सैराब हुई।

6. मेरा हाल यह है कि अगर कोई नागहानी मुसीबत आ जाती है तो मैं कहा करता हूँ या सैय्यिदुस सादात या सनदी (ऐ आकाओं के आका ऐ मेरे सर पनाह!!)

7. खुदा–ए–रहमान व रहीम के हुजूर आप मेरे श्शफीअ बन जाईए कि वह मेरी लगज़िशों को मुआफ फरमा दे और ऐसा एहसान कीजिए जो मेरे दिल में भी न हो।

8. मुझ पर निगाहे करम हमेशा रखिए। अपने फजल से मेरी कोताहियों की पर्दह पोशी फरमाईये।

9. मेरे साथ चश्म पोशी और अफ्व का मुआमला कीजिए, मेरे आका आपकी हुजूरी से मैं कभी सरताबी नहीं कर सक्ता।

10. मैंने वसीला तलब किया है रसूले मुख्तार का। और वह रसूले मुख्तार जो आसमान पर जाने वाले (फरिशतों)से भी अफजल तरीन हैं और खुदा–ए–वाहिद का एक राज़ हैं।
11. तमाम मख्लूकात में अफजल तरीन बलन्दी के लेहाज से तमाम अम्बिया–ए–किराम के उपर जिन्न व बशर के लिए सरमाय–ए–रहमत हैं उनको रूशद व हिदायत की राह पर लगाने वाले।
12. जमाले जाहिरी व बातिनी के मालिक! पाक व बुलन्द है वह जात जिसने इस जमाल को पैदा किया। आप जैसा साहिबे जमाल सारी काईनात में किसी को नहीं पाता हूँ।
13. मैं आपके दर पर पनाह लेने आया हूँ, बड़ा आसरा है कि अल्लाह तआला मुझे बख्श देगा। जो मेरे अकीदा और अमल में ख़राबी है।
14. आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मदह मेरी ज़िन्दगी का मामूल है जो हमेशा से है और आपकी मुहब्बत मालिके अर्श (अल्लाह) के नज़दीक जरिया–ए–तकर्रु है।
15. आप पर बेहतेरीन सलात–व–सलाम हो। हमेशा हमेशा ला तअदाद।
16. आपके आल व असहाब सब पर जो बख्शिश व मगफिरत के दरिया थे।

नोट:–इस कसीदा का ग्यारहवाँ शेअर अलाहिदा से हुजरे–ए–मुबारक कि उस खिड़की के ऊपर नक्श है जो अगवात के

दिका के सामने है उस मकाम पर जिसको मेहराबे तहज्जुद कहा जाता है वह शअर यह है।

तर्जमा :– जमाले जाहिरी व बातिनी के मालिक! मुबारक व बुलन्द है वह जात जिसने इस जमाल को पैदा किया। आप जैसा साहिबे जमाल सारी काईनात में किसी को नहीं पाता हुँ।

इस कसीदे का पहला, दूसरा, तीसरा, छठा, सातवाँ, आठवाँ, नवाँ, दस्वाँ और तेरहवाँ शेअर जालिम नज्दी वहाबी हुकूमत ने रंग व रोगन के बहाने मिटा दिए हैं, बाकी सात अशआर अब भी पढ़े जा सकते हैं। अल्लाह तआला निशाने रसूल सलल्लाहो अलैहि व सल्लम मिटाने के शौक में बदमस्त रहने वाली नज्दी हुकूमत के खुर्द बुर्द से उन्हें महफूज रखे। (आमीन)

कसीदह हेदादिया दाखलियह

यह एक नादिर कसीद–ए–नात है जो हुजरह–ए–नबविया की अन्दरूनी दिवार पर कूफी खत में नक्श किया गया है। इस वालेहाना कसीदा को जो सलात व सलाम के सेगों पर मुश्तमिल है। हजरत कुतुबे ईरशाद, आरिफे बिल्लाह मौलाना अब्दुल्लाह बिन अलवी हुसैनी अलहजरमी शाफई मुतवफ्फा 1132हिजरी ने नज्म किया था। इस कसीदा मुबारका का सोलहवाँ शेअर हुजरह–ए–शरीफा के बाहर मवाजहा के उपर भी नक्श है। उन अशआर का तरजमा दर्ज जैल है।

1 तेज़ रफ्तार ऊँटों पर हम सेहरा व बयाबान तै करते हुए चल रहे हैं। हमारे काफला को सारबानों की हदी

ख्वानी नहीं बल्कि जज़बात व इशतियाक की फरावानी आगे बढ़ा रही है।

2. हम उन ऊँटों पर सरेशाम सवार होते हैं और मुसलसल सफर करते रहते हैं यहाँ तक की दूसरी रात आती है तारीक, सियाह, भयानक मगर ऊँटों से उतरने का नाम नहीं लेते।
3. उस सवारी पर हमें नींद भी आती है और बड़ी मीठी नींद आती है, क्योंकि रूहे मुहब्बत के आगोश में आसूदह रहती है।
4. गर्म हवाओं के थपेड़े हमें खनक मालूम होते हैं झुलसा देने वाली लू जब चलती है तो मशकीज़ों को झिन्झोड़ देती है, मतलब यह कि सख्त गर्मी और लू की यह तकलीफ भी मुझे अच्छी लगती है। क्योंकि हम दयारे महबूब की तरफ रवाँ हैं।
5. हम उसी तरफ रवाँ दवाँ बढ़ते रहे। यहाँ तक कि वह वक्त आया कि एक वसीअ मैदान में आकर अपने ऊँट का कजावा हमने उतारा।
6. हम खैरूल बशर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की मेहमानी में आ गए, जो रसूले रहमत, दरियाए सखावत और सरदारे अरब हैं।
7. रसूले अमीन, हाशमी, वाला मरतबत, आने वाली नस्लों के सरदार, और उनके सरदार जो गुज़िशता सदियों में गुज़र चुके हैं।

8. सारे आलम की पनाह गाह, हर उम्मीदवार की आरज़ू, बलन्द फितरत, तमाम खूबियाँ रखने वाले, जिस्म और दिल के लेहाज से पाक व मुअत्तर।
9. नादार और रहमते परवर दिगार के तलबगार आपसे उम्मीद रख्ते हैं जो खुश्क साली के सताए हुए, मेह से घन्घोर घाटाओं से उम्मीद रख्ते हैं।
10. आप करीम हैं, हलीम हैं। आपकी शान जूद व दो बख्शिश है। हर किस्म के रन्ज व अन्दोह ज़माना के सख्तियों और मसाईब में आपको आसरा समझते हैं।
11. आप रहीम हैं, अल्लाह ने आपको मखलूक के लिए रहमते सरापा बना कर पैदा किया है, और दुनिया में इस लिए भेजा कि आप कुर्बे हक और कामरानी से लोगों को नज़दीक करें।
12. आपको अल्लाह ने सदाकत, हक्कानियत और हिदायत की दा'वत देने के लिए भेजा और आपको सखावत, नर्म जोई, नर्म खोई और शेरें ज़बानी में मुम्ताज़ किया।
13. आप ही के जरिआ से और आप ही के सदके में अल्लाह ने शिर्क व हिलाकत की राह से नेजात दिलाई और उन रास्तों से महफूज रखा जो बुत परस्ती, नफ्स परस्ती और शैतान परस्ती का रास्ता था।
14. और हमसबको अपने पसन्दीदह दीन की नेअमत से नवाज़ा, ऐसा दीन, जिसको अल्लाह की रजा और पसन्द हासिल है। लेहाजा अल्लाह तआला का हज़ार

हज़ार शुक्र हम पर वाजिब है।

15. अल्लाह तआला का बड़ा करम और एहसान यह है कि उसने आपको मबउस फरमाया, और आपको हम इन्सानों में से मुन्तखब किया और आपकी शान को अजमत दी और आपका ज़िक्र बुलन्द किया।
16. आप वह अज़ीम पैगम्बर हैं जिनके अख़लाके करीमा वह हैं जिनको कुरआने करीम ने ज़िक्र करके शर्फ बख़्शा है।
17. अल्लाह तआला की वह जाते वाला सिफात है जिसने आपको वही और फतह मन्दी की दौलत दी, और आपकी जात को रूअब व जलाल बख्शा।
18. आपको ऐसे मुअजेज़ात दिए जो सब खुले हुए और रौशन हैं और जिनकी तअदाद बारिश के कतरों से बढ़ गई है। आपके मुअजज़ात के बाद वह सब हैं जिनको नबी बनाया गया(यानी अम्बियाए साबेकीन अलैहिमुस्सलाम)
19. आपको कुरआने अजीम बख्शा, वह कुरआन जिसने सारे आलम को मुकाबला करने में नाकाम कर दिया, और कुरआने करीम का अतिया वह है जिसने आपको कुव्वत बख्शी क्या कहने हैं उस कुव्वत और दबदबा के!!
20. या रसूलल्लाह! हमें आपकी गुलामी के साथ शर्फे निस्बत भी हासिल है, हम आपके दरबार में मोहब्बत और शौक का नज़राना ले कर हाजिर हुए हैं।
21. आपका फजल व एहसान की चौखट पर हम दस्तबस्ता खड़े हैं ताकि इस मिट्टी को चूमें और आँखों से लगाएँ

जो दरे पाक पर पड़ी है।

22. अब हम आपके रूबरू, रूखे मुबारक के सामने इसतादह हैं, इस चेहरा–ए–अनवर का मुवाजेहा हमें हासिल है जिसके सदके में कहत साली के वक्त बारिश से हम सैराब किए जाते हैं।
23. हम एक वफ्द की सूरत में आए हैं (जिस तरह आपकी हयाते जाहिरी में कबाईल के वफूद आते थे और अपनी ज़रूरियात बयान किया करते थे) और हम उस जाते गिरामी के मेहमान हैं जो सखावत व मेहमान नवाज़ी, लुत्फ व एहसान का मम्बअ है।
24. दिल अरमानों से भरा है, ऐसी हाजतें भी हैं जिनके बरआने कि उम्मीद लेकर आए हैं।
25. या रसूलल्लाह! एक निगाहे करम इधर भी कीजिए! दीन व दुनिया दोनों की हाजतें और ज़िन्दगी की मुशकिलात दूर होने की शफाअत कीजिए।
26. दीन व दिल की इस्लाह हमारी मुराद है। मेरे आका मुझ पर नजरे करम फरमाईये।

सलात व सलाम

27. आप पर लाखों सलाम और लाखों दुरूद ऐ जाते पाक जिसने रौशन हिदायत, इमान बख्श किताबे अजीम की

आयात पढ़कर सुनाई।

28. आप पर हज़ारों सलात व सलाम हो, ऐ हादिये आ'जम! ऐ मशरिक व मगरिब में उजाला फैलाने वाले!

29. आप पर दुरूद व सलाम हो, ऐ वह जाते गिरामी जिससे बेहतर तरीका पर किसी ने अल्लाह तआला से दुआ नहीं की। आप अल्लाह तआला की हम्द व सना, और आप अल्लाह के एहसानात का जिक करके सिखाने वाले महबूब हैं। आप पर सलाम हो।

30. सलाम आप पर हो ऐ शबे मेअराज में रब्बे करीम के हुजूरी का शर्फ हासिल करने वाले और सिदरतुल मुन्तहा तक पहुँचने वाले रसूले मुखतार।

31. आपका मकाम "अव अदना" से जाहिर है। उस अज़मत व बलन्दी का हमें होश रहना चाहिए और उस मकामे आली का जो चाँद तारों से आगे था।

32. आप पर अल्लाह का सलाम हो, जब तक एक शख्स भी रूए ज़मीन पर यह कहने वाला रह जाए जो कहे अल्लाह हमारे लिए काफी है, उसके बाद हुजूरे अनवर मोहम्मद मुस्तफा अहमदे मुजतबा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं।

33. आप पर अल्लाह का सलाम हो जब तक नसीमे सहर चलती रहे और शैदाईयों के रूह को हिलाती रहे।

34. आप पर सलाम जब तक नसीमे सुब्ह चलती रहे और जबतक परिन्द शाखों पर चहचहाते रहें।

35. आप पर सलाम हो जब तक हदी ख्वाँ अपनी हदी ख्वानी से दिलों में जोश पैदा करते रहें और आपकी आरामगाह तक जाने का शौक और वारफतगी बाकी रहे।

36. आप पर सलाम हो इस कदर सलाम जिस कदर और जिस तादाद में ज़मीन से उगने वाले दरख्त और पत्ते हैं और जिस तादाद में रेत के जर्रात हैं और मुस्लाधार बारिश की बूँदों की जो तादाद है।

37. आप पर सलाम हो, आप सरपनाह हैं, तंगी व तुर्शी की हालत में, और आराम की हालत में, दुख और सुख दोनों में आप ही हमारे हैं।

38. आप पर सलाम हो, आप हमारे रहबर व मुक्तदा हैं और आपही मेरे खज़ाना हैं, आप अल्लाह की तरफ से फरियादरस हैं।

39. अल्लाह आप पर अपना दुरूद व सलाम भेजता रहे हमेशा हमेशा, और आपके आल व असहाब पर।

कसीदा बगदादिया वतरियह

यह 121 अशआर का कसीदा हजरत अबू अब्दुल्लाह मजदुददीन मुहम्मद बिन रशीद बगदादी शाफई रहमतुल्लाह अलैहि (म662हिजरी) का है, इस कसीदा मुबारका के अक्सर अशआर उसी दिवार पर कुन्दा हैं जो मवाजेहा शरीफ के उपर किबला की जानिब है, और उसका सिलसिला मकामे नुजूले जिब्राईल (जिसको मन्ज़िलुलवहये भी कहते हैं) तक चला गया

है, और रौजा-ए-जन्नत के उपर तीन गुम्बदों के हलकों में मुनक्कश हैं। उस कसीदा को बग़दादिया इस लिए कहते हैं कि हज़रत इब्ने रशीद बग़दादी की तसनीफ है और वितिर ये इसलिए कहते हैं कि अशआर की तादाद(21) है जो वितिर (ताक) का अदद है। अर्बी अशआर का तरजमा हस्बे जैल है।

1. रसूलल्लाह सलल्लाहो अलैहि व सल्लम के नूर से आलम रौशन है और हर एक की आमद व रफ्त आपही के नूर से है। यानी काईनात की हरकत व हयात आपके नूर से वाबस्ता है।
2. अजमते हक़ ने मखलूक के लिए रहमत बनाकर आपको पैदा किया, सारा आलम आपके एहसानात में करवटें ले रहा है।
3. वजूदे हजरते आदम से पहले आपकी अजमत आशकारा हुई। आपके अस्माए गिरामी इससे भी पहले लौहे महफूज में दर्ज हुए।
4. तमाम अम्बिया ने आपकी बेअसत की नवैद सुनाई कोई पैगम्बर ऐसा नहीं गुज़रा जिसने आपकी (बेअसत) की उम्मीद न रखी हो।
5. तौराते मूसा अलैहिस्सलाम में आपकी नेअमत व सिफात मजकूर हैं। इन्जीले ईसा अलैहिस्सलमा आपके मदाएह से मअमूर है।
6. बशारत देने वाले, अन्जाम से आगाह करने वाले, सरापा शफकत व करम, मेहरबान नरम खू, रहमदिल, मोहसिन, खताकार को कुदरत रख्ते हुए मुआफ करने वाले।
7. हजीर-ए-कुदस में पाँव चले कौन? वह रसूल सलल्लाहो अलैहि व सल्लम जिनका मन्सब तमाम मनासिब पर

फाईक है।

8. आस्मान के बलन्द तरीन सिरे पर अपने रब से गुफतगू की। जबकी जिब्राईल अलग और दूर खड़े थे और हबीब को करीब किया गया था।
9. उनके इकबाल से हम तमाम कौमों पर फाईक हैं और हमें वह मिल्लत मिली जिसके तलबगार तमाम अम्बिया थे।
10. मक्का का शहर आप ही के दम से मक्का है और आप ही के वजूदे पाक से बैतुल्लाह किब्ला बना, आप ही के जात से अर्फात का मैदान मुक़ददस बना, जहाँ कुरबानी के जानवर ले जाए जाते हैं।
11. आपके वजूदे गिरामी के आगहीं झोंकों से पूरा शहरे तैबा महक उठा, और उसके नसीम से पूरा खित्ता दमक उठा, मुश्क की क्या हैसियत है? काफूर की क्या हकीकत है? आपके शहर पाक का एक झोंका सबसे ज़्यादा इत्र बेज़ है।
12. बावकार चेहर-ए-ताबाँ वाले, हसीन ऐसे के चौदहवीं का चाँद हो, या जैसे रात की तारीकी के बाद सुब्ह की रौशनी नमूदार हो, जो गुम्राहियों की तारीकी दूर कर दे।
13. काफिला के हुदी ख्वाँ! तु किसको अपनी धीमी और गुनगुनाती आवाज़ में पुकार रहा है?तेरी अवाज़ से सब पर नशा कैसी कैफ़ियत तारी है और तारीकयाँ छट रही है।
14. चौदहवीं का एक चाँद नहीं, कितने माहे तमाम हैं जो यकायक रौशन हो गए। नहीं नहीं ये मोहम्मद सलल्लाहो

अलैहि व सल्लम के चेहर–ए– अनवर की चमक है, या शराब के जाम गरदिश में हैं। नहीं, यह सब कुछ नहीं आपकी बातें (हदीसें) मस्त कर रही हैं

15. हुज्जाज अपने जलवह में हमारी रूहें लिए जा रहे है और हम सब नशा में मस्त हैं। गोया काफिला में जाम व बादह का दौर चल रहा है।
16. हमारे कुलूब आपकी सिफाते हस्ना सुनकर सुकून पा गए हैं। दूसरी तरफ आपके शौक में झूम रहे हैं और काफिले मस्त हैं।
17. तैबा में सुलहाए उम्मत ने अपने कजावे डाल दिए और हम दियारे मुकददस की उन वादियों से महरूम हैं।
18. अपनी मुसीबतों, अपनी शामते आ'माल और कोताहियों की वजह से हम महरूमे ज़ियारत कर दिए गए। आह! कब वह वक्त आएगा जब ये बन्दा मजबूर छोड़ा जाएगा, और मदीना पाक से हम करीब होंगे।
19. अपनी कोताहियों, अपने अफलास और फक्र के साथ या रसूलल्लाह! हम आपकी तरफ भाग कर आना चाहते हैं।
20. अपनी हुरमत के सदके में मेरा हाथ पकड़िये, उस दिन जब सबसे हिसाब लिया जाएगा। हम उस दिन के लिए आप ही की शफाअत से आस लगाए हुए हैं।
21. आपकी मदह करके अल्लाह से अपनी मग़फिरत का तालिब हों, अगरचे ऐसा बन्दा हूँ जिससे उम्र भर लगज़िशें ही होती रही हैं।

जरूरी नोट

अहले इल्म से गुज़ारिश है कि किताब में कोई कमी या ग़लती नज़र आए तो ख़त लिख कर या टेलीफोन के जरिए इत्तिला दें। मैं शुक्र गुज़ार हूँगा।

ईद मिलादुन्नबी की शरई हैसियत

मोसाफहा (हाथ मिलाना) दोनों हाथ से सुन्नत है!

दोनो हाथों से मोसाफहा करना रसूलल्लाह सल्ललाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत और सहाब–ए–कराम का तरीका है।

हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रजी अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं की रसूलल्लाह सल्ललाहो अलैहि वसल्लम ने मेरा हाथ अपने दोनों हाथों के दरम्यान ले कर मुझको काअदे में तहिय्यात पढ़ना सिखाया।

(बुख़ारी शरीफ जिल्द 2 पेज न0 926 किताबुल इस्तिज़ान)

हदीसे पाक के तर्जमें से ऐसा कुछ भी ज़ाहिर नहीं है कि रसूलल्लाह सल्ललाहो अलैहि वसल्लम ने एक हाथ से मोसाफहा किया। लेहाज़ा एक हाथ से मोसाफहा करना दावा बगैर दलील है बल्कि यह कहना ज्यादा मुनासिब है कि रसूलल्लाह सल्ल्ललाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल करते हुए हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रजी अल्लाहु तआला अन्हु ने भी दोनो हाथों से मोसाफहा किया है मजीद सुबूत व वजाहत के लिए ताबईन–ए–कराम का अमल भी मुलाहिज़ा हो, ईमाम बुखारी ने हजरते अब्दुल्लाह बिन मुबारक मुतवफ्फी 181 हिजरी, और

हम्माद बिन जैद बसरी मुतवफ्फी 199 हिजरी के कौल व अमल को नकल कर के भी दोनों हाथों से मोसाफहा करने के कौल को साबित किया है।

"और हज़रते हम्माद बिन जैद ने हज़रते अब्दुल्लाह बिन मुबारक से दोनो हाथों से मोसाफहा किया।"

(बुख़ारी शरीफ जिल्द 2 पेज न0 926 किताबुल इस्तिज़ान, बाब अल अख्जि बिल यदैन)